हिम-ज्योति

अंक-3

वर्षः 2020-21

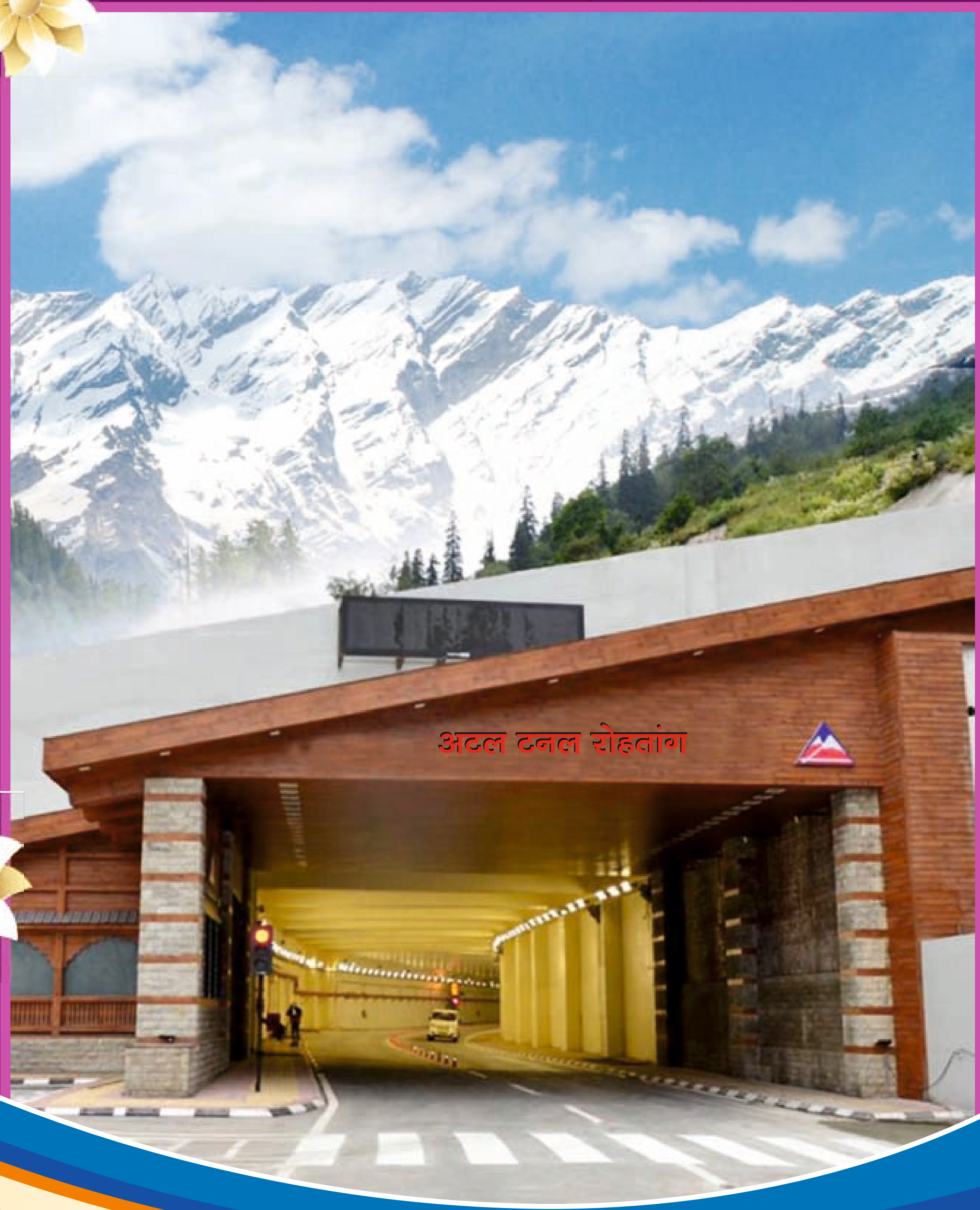

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

बद्दी (हिमाचल प्रदेश)

हिम-ज्योति
2020-21

हिमाचल प्रदेश में कर्मचारी राज्य बीमा योजना एक अवलोकन

व्याप्त केंद्र	शिमला, सोलन, सिरमौर, उना, कांगड़ा, बिलासपुर, मंडी संपूर्ण जिले
31.03.2020 को कुल कर्मचारी	310200
31.03.2020 को कुल बीमाकृत व्यक्ति	348140
कुल लाभार्थी	1350783
शाखा कार्यालय/डी.सी.बी.ओ.	7
डिस्पेंसरी	17
अस्पताल	02, एक क.रा.बी अस्पताल (50 बिस्तर) तथा एक क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल (100 बिस्तर)
वित्तीय वर्ष 20.–21 में अंशदान	90,35,42,611 'जनवरी–2020 तक
हितलाभ भुगतान वर्ष 2020–21 (दिसंबर तक)	122894895
वर्ष 2020–21 में अति विशिष्ट चिकित्सा बिलों का भुगतान	85509337
कुल व्याप्त फैक्ट्री	9448
वसूली 2020–21 (जनवरी–21 तक)	25687122 (लक्ष्य – 3.22 करोड़)
2020–21 में निष्पादित मेडिकल बोर्ड मामले	79
2020–21 में कुल प्राप्त व निष्पादित स्थाई अपंगता हितलाभ मामले , जनवरी –21 तक	प्राप्त – 131, निष्पादित – 79
2020–21 में कुल प्राप्त व निष्पादित आश्रितजन हितलाभ मामले, जनवरी – 21 तक	प्राप्त – 29, निष्पादित –29
न्यायालय के मामले जनवरी 2021 तक	27
सूचना का अधिकार अधिनियम के मामले जनवरी, 2021 तक	प्राप्त – 65 , निष्पादित 65

हिम-ज्योति

अंक–3 2020-21
(केवल विभागीय परिचालन के लिए)

संरक्षक
आर. गुणसेकरन
अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक

संयोजक
हरपाल सिंह
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादक
कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन समिति सदस्य

पी.बी.गुरूंग
उप निदेशक

डा. अमित शालीवाल
राज्य चिकित्सा अधिकारी

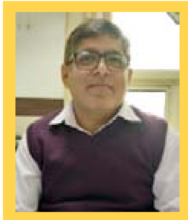

विकास वर्मा
सहायक निदेशक

संपादन सहयोग

दुखमोचन गोपाल
अधीक्षक

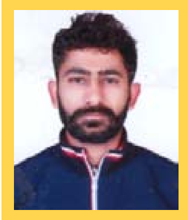

प्रदीप
आशुलिपिक

अभिषेक तिवारी
प्रवर श्रेणी लिपिक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।
इनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सत्यमेव जयते

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
बद्दी (हिमाचल प्रदेश) –173205
दूरभाषः 0172–245961, फैक्स 0172–245962, वी.ओ.आई.पी. 21795025,
ई–मेल: rd-hp@esic.nic.in, rajbhasha.hp@esic.nic.in

पत्रिका में इंटरनेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार उपयोग किया गया है।

क्रम सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	संदेश	महानिदेशक	1
2.	संदेश	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	2
3.	संरक्षक की कलम से	आर. गुणसेकरन	3
4.	प्रभारी राजभाषा अधिकारी की कलम से	हरपाल सिंह	4
5.	संपादकीय	कुमार रविशंकर	5
6.	श्रम शक्ति को सशक्त करता श्रम कानून	पी.बी. गुरंग	6–7
7.	राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन	कुमार रविशंकर	8–9
8.	हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ	फोटो गैलरी	10–11
9.	वर्तमान में कबीर के काव्य की प्रासंगिकता	अरविंद कुमार मंगलम	12–13
10.	"हमारे दैनंदिन जीवन में हिन्दी का महत्व"	विकाश कुमार	14–15
11.	'हिंदी' के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	विरेंद्र चौहान	16
12.	फुर्सत ही कहाँ है	चाहत गोयल	17
13.	वो पतंग	अंशुल	18–19
14.	प्रकृति के साथ सामंजस्य	मनोज तंवर	20
15.	कभी तो सवेरा होगा	नवजोत शर्मा	21
16.	खबर है	अभिषेक तिवारी	22
17.	कार्यालय गतिविधियां	फोटो गैलरी	23
18.	कोरोना महामारी का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव व इन कुप्रभावों का निराकरण!	डॉ. राहुल शर्मा	24–25
19.	कोरोनावायरस जानकारी ही बचाव है...	मीना कुमारी	26–27
20.	छोड़ो कोरोना का रोना	सूरज भान	28
21.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम आर्दश अस्पताल, बद्दी के पन्ने से	फोटो गैलरी	29
22.	सृजन ही मनुष्य को जीवंत बनाता है	हरपाल सैनी	30–31
23.	जिंदा दिल जिंदगी	नवजोत शर्मा	32
24.	गरीबी और प्रवासियों की व्यथा	दुखमोचन गोपाल	33
25.	खुश हूँ	बृज मोहन	34
26.	आप जीवन में सबसे अच्छी सलाह क्या देना चाहोगे ?	आयुषी ठाकुर	35
27.	ध्यान से शारीरिक अध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक लाभ	अंजना राणा	36–37
28.	प्रिय पतिदेव	आशा मेहता	38
29.	विदाई गीत	अंजना राणा	39
30.	मेरी इंग्लैंड यात्रा	प्रदीप शर्मा	40
31.	यात्रा वृतांतःघुमक्कडी किस्मत से मिलती है	कमलेश इगराल	41
32.	गजल	फिरोज अहमद	42
33.	शायरी	ऋषि	43
34.	महिला दिवस के आयोजन की झलकियां	फोटो गैलरी	44
35.	पीड़ परायी किसी ने ना जानी....	मनुज ठाकुर	45
36.	अटल सुरंग लाहौल स्पीति की जीवन रेखा	दुखमोचन गोपाल	46
37.	विविध गतिविधियां	फोटो गैलरी	47
38.	जाखू मंदिर	अभिषेक तिवारी	48
39.	गसोता महादेव मंदिर हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)	राकेश कुमार	49
40.	डलहौजी	सुभाष चंद्र गुप्ता	50–51
41.	भरमौर	नरैन सिंह	52
42.	कश्मीर	ऋषि	53–55
43.	राजभाषा हिन्दी कार्यशाला	फोटो गैलरी	56–57
44.	प्रशंसा पत्र	प्रतिक्रियाएं / शुभकामनाएं	58

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
MINISTRY OF LABOUR & EMPLOYMENT, GOVT. OF INDIA
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in

अनुराधा प्रसाद
महानिदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी की गृह पत्रिका **हिम–ज्योति** का तीसरा अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति की संवाहिका भी है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम का लाभाधिकारी वर्ग निगम की योजनाओं से हिंदी भाषा के माध्यम से अधिक सरलता से जुड़ता है। गृह पत्रिका के माध्यम से निगम के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को भी एक अवसर मिलता है।

हिम–ज्योति के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आशा है कि हिम–ज्योति का अंक–3 क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति के लिए सहयोग देने के क्रम में महती भूमिका अदा करेगी।

शुभकामनाओं सहित,

अनुराधा

अनुराधा प्रसाद

सत्यमेव जयते

मनोज कुमार शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
MINISTRY OF LABOUR & EMPLOYMENT, GOVT. OF INDIA
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी की हिंदी गृहपत्रिका हिम–ज्योति का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा दिया जा रहा है। अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए निगम की कार्य संस्कृति के साथ–साथ प्रदेश के सांस्कृतिक पहलुओं के प्रति भी जागरूकता बढ़ाएगी।

मंगलकामना के साथ,

मनोज कुमार शर्मा

संरक्षक की कलम से...

पश्चिमी हिमालय की गोद में बसे हुए देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश की गृह पत्रिका 'हिम–ज्योति' का वर्ष 2020–21 का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अति हर्ष की अनुभूति हो रही है। गगनचुंबी हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच बसे हिमाचल प्रदेश की संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कार अनुकरणीय है। इसे ऋषि–मुनियों की तपोस्थली के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक ग्रंथों में वर्णित कुछ महान ऋषियों ने इस पवित्र भूमि पर अपने तपोबल से अर्जित ज्ञान का प्रकाश पूरे विश्व में फैलाया। भौगोलिक दृष्टि से यहां का जीवन काफी संघर्षमय है। परिणामस्वरूप यहां के लोग बहुत की कर्मठ तथा सौंपे गए दायित्वों का समर्पित भाव से निर्वहन करते हैं। समस्त कार्मिक कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के बेहतरीन कार्यान्वयन के प्रति सजग हैं तथा निगम द्वारा समय–समय पर बीमाकृत व्यक्तियों के लिए लागू की जाने वाली विभिन्न योजनाओं को उन तक पहुंचाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति भी यहां के कार्मिकों का समर्पण प्रशंसनीय है। कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहां पर कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रचलन बहुत ही प्रशंसनीय है।

कहा जाता है कि कार्मिकों के मौलिक लेखन द्वारा ही किसी क्षेत्र विशेष की सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों को अच्छे से समझा जा सकता है क्योंकि अपने विचारों/कल्पनाओं को मूर्त रूप देने के लिए हम अपने परिवेश एवं अपनी संस्कृति को ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मूर्तरूप प्रदान करते है। गृह पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य भी तो यही है कि राजभाषा हिंदी में मौलिक लेखन को बढ़ावा मिले तथा राजभाषा हिंदी का राजकीय कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग हो। अपने इस दायित्व को भी यहां पर तैनात कार्मिकों ने बड़े सहज भाव से निभाया है। मैं पत्रिका हेतु अपने उत्कृष्ट लेख/रचनाएं प्रदान करने के लिए सभी लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी सभी रचनाकार अपने अमूल्य विचारों से पाठकों को ज्ञानवर्धन करते रहेंगे।

आशा है कि गृह पत्रिका 'हिम–ज्योति' का यह अंक पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। पाठकों की प्रतिक्रियाएं हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत है जिनका हमें बेसब्री से इंतजार रहता है। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ....

आर. गुणसेकरन
अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक

प्रभारी राजभाषा अधिकारी की कलम से...

मानव प्रबंधन किसी भी महान् संस्था का मूलभूत कार्य होता है और उसमें एक पहलू यह भी होता है कि उस संस्था में कार्य करने वाले लोगों को अपने व्यक्तित्व को निखारने और अपनी रचनात्मक सृजनता के लिए कितना मौका मिलता है ताकि उनका सार्वभौमिक विकास हो सके और वह अपने और संस्था के उद्देश्य में सामंजस्य बिठा सकें और अपना और संस्था का समुचित विकास सुनिश्चित कर सके।

इसी कड़ी में राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, हिमाचल प्रदेश की तरफ से एक चेष्टा और की गई है और यह बेहद हर्षोल्लास और गर्व का विषय है कि सभी वर्गों के कार्मिक और अधिकारी गण की तरफ से बढ़–चढ़कर अति उत्साह से हिस्सा लिया गया और परिणाम आपके समक्ष है।

इस प्रयास में राजभाषा शाखा का योगदान सराहनीय है और मैं राजभाषा प्रभारी अधिकारी होने के नाते सभी साथियों के कलात्मक, रचनात्मक और सृजनात्मक विकास की अभिलाषा रखते हुए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(हरपाल सिंह)
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादकीय

आदरणीय पाठकगण

वर्तमान में हिंदी 2.0 अर्थात इंटरनेट पर हिंदी के प्रयोग के नए चरण का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है। हिंदी के इस नए अवतार से हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा तो मिला ही है साथ ही हिंदी भाषा को वैश्विक रूप में स्थापित करने का प्रयास भी जोरों पर है। कंप्यूटर की दुनियां में यूनीकोड के माध्यम से लगभग 100000 अक्षर चिन्हों का कोडिंग संभव है और जिसके कारण हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं एवं लिपियों का प्रयोग आसान हो गया है। यूनीकोड से आगे बढ़कर गूगल इंडिक इनपुट एवं गूगल ट्रांसलिट्रेशन के प्रयोग ने कंप्यूटर और मोबाइल पर हिंदी के इस्तेमाल को बेहद आसान कर दिया है। कोरोना काल में जब लोगों के जीवन में सामाजिक दूरी का दौर आया तो इंटरनेट के माध्यम से संप्रेषण को और भी अधिक बढ़ावा मिला है। जब बैठक वेब मिटिंग के माध्यम से होने लगा और सेमिनार की जगह वेबीनार ने ले लिया तब लोगों ने बहुत ही सरलता और सहजता से हिंदी का प्रयोग किया। इस क्रम में हिंदी के प्रयोगकर्ताओं ने हिंदी भाषा के शब्दकोष को भी समृद्ध किया है।

हिंदी की पत्रिकाओं को ई–पत्रिका के रूप में भी तैयार कर इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री बढ़ाने के भी निर्देश हैं। इस हेतु हिम–ज्योति का यह अंक आप ई–पत्रिका के रूप में भी पढ़ सकते हैं। हिम–ज्योति के अंक 2 पर मिली आपकी प्रतिक्रियाओं से हम उत्साहित हैं और आपका धन्यवाद करते हुए पत्रिका का तीसरा अंक आपके समक्ष रख रहे हैं।

मैं पत्रिका के तीसरे अंक में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं देने के लिए सभी रचनाकारों का धन्यवाद करता हूं। साथ ही पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी सभी वरिष्ठ अधिकारियों का आभार व्यक्त करता हूं।

आपकी प्रेरणा, सुझाव तथा सहयोग से भविष्य में भी इस पत्रिका को शीर्ष स्तर तक पहुंचाने का प्रयास जारी रहेगा। आपके मार्गदर्शन एवं प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

रविशंकर

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रम शक्ति को सशक्त करता श्रम कानून

पी.बी. गुरंग
उप निदेशक

संविधान में श्रम समवर्ती सूची में शामिल है, इसलिए संसद और राज्य विधान मंडल दोनों के द्वारा श्रम संबंधित कानून बनाए जाते हैं। राज्यों के 100 से अधिक तथा लगभग 40 केंद्रीय कानून श्रमिकों के हितों को साधने के लिए बनाया गया है। वर्ष 2002 में श्रम कानूनों के संबंध में गठित दूसरे राष्ट्रीय आयोग ने मौजूदा कानूनों को जटिल पाया तथा श्रमिकों के हितों की समग्र सुरक्षा के लिए केंद्रीय श्रम कानूनों को 5 वर्गों में सीमित करने की सिफारिश की –

1. औद्योगिक संबंध
2. मजदूरी
3. सामाजिक सुरक्षा
4. सुरक्षा
5. कल्याण तथा कार्य स्थिति

"राष्ट्र के निर्माण में श्रमिकों का अहम योगदान होता है। अगर श्रमिक दुखी रहेगा तो देश सुखी नहीं रह सकता "। श्रम को महायज्ञ बताते हुए प्रधानमंत्री ने उक्त बातें 20 जुलाई, 2015 को आयोजित 46 वें श्रम सम्मेलन के संबोधन में कहा था। श्रम सुधारों की दिशा में वित्त मंत्री की अगुवाई में एक समिति गठित की गई थी ताकि समग्र सोच के साथ श्रम सुधारों को अंजाम दिया जा सके।

इस दिशा में श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा 2019 में चार बिल लाये गये जिसमें श्रमिकों के वेतन सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य सुरक्षा आदि हितों का ध्यान रखा गया है। सिर्फ चार श्रम संहिता को लाकर श्रमिकों के हितों की सुरक्षा की समग्र व्यवस्था की गई है। श्रम संहिता के चार स्तंभ हैं –

1. **मजदूरी संहिता**
2. **सामाजिक सुरक्षा और कल्याण संहिता**
3. **औद्योगिक संबंध संहिता**
4. **व्यवसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता**

- **मजदूरी संहिता** – इस संहिता में न्यूनतम मजदूरी कानून, मजदूरी भुगतान कानून, बोनस भुगतान कानून और समान पारितोषिक कानून को समाहित किया गया है। इस संहिता से 50 करोड़ संगठित और असंगठित श्रमिकों को वेतन सुरक्षा के साथ न्यूनतम मजदूरी की गारंटी मिलती है। इस संहिता में कार्य अवधि डिजीटल भुगतान आदि के संबंध में नियम निर्धारित किए गए हैं जिससे संगठित तथा असंगठित क्षेत्र के श्रमिको को लाभ मिलेगा।

- **सामाजिक सुरक्षा संहिता** – सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 संशोधित प्रावधान के अंतर्गत भवन निर्माण में लगे मजदूर, असंगठित क्षेत्र के कामगारों, टमटम कर्मी और प्लेटफार्म कामगारों के लिए विभिन्न प्रकार के सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों में बदलाव होगा, जिसमें कर्मचारी भविष्य निधि, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, ग्रेच्युटी तथा मातृत्व लाभ से जुड़े बदलाव शामिल हैं। ई.एस.आई.सी और ई.पी.एफ.ओ के दायरे से किसी व्यवसायिक प्रतिष्ठान के बाहर होने के संबंध में नियम और शर्तों के भी प्रावधान इसमें किए गए हैं।
- **ई.एस.आई.सी.** – छोटे से अंशदान में ई.एस.आई.सी अस्पताल तथा डिस्पेंसरी में मुफ्त इलाज की सुविधा। असंगठित क्षेत्र के मजदूर भी ई.एस.आई.सी की सुविधा प्राप्त कर सकेंगे। ई.एस.आई.सी. की सुविधाओं का विस्तार देश के सभी जिलों में किया जाएगा। जोखिम भरे काम में एक भी मजदूर कार्यरत हो तो वह ई.एस.आई.सी के हितलाभों को प्राप्त कर सकेगा। नए तकनीकी से जुडे जैसे उबर, ओला, फ्लिपकार्ट, एमेजन आदि से जुड़े लोग भी ई.एस.आई.सी. के लाभार्थी बन पाएंगे। बागान मजदूरों को भी ई.एस.आई.सी. के दायरे में लाया जाएगा। अधिक जोखिम क्षेत्र में कार्य कर रहे संस्थानों को अनिवार्य रूप से ई.एस.आई.सी. से जोड़ा जाएगा।
- **ई.पी.एफ.ओ का विस्तार**– संगठित-असंगठित एवं स्वरोजगार क्षेत्र के सभी मजदूरों को पेंशन (ई.पी.एफ.ओ) का लाभ मिलेगा। असंगठित क्षेत्र को व्यापक सामाजिक सुरक्षा के लिए सामाजिक सुरक्षा निधि का निर्माण किया जाएगा। फिक्सड टर्म कर्मचारियों के लिए ग्रेच्यूटी में न्यूनतम सेवा कार्यकाल की बाध्यता नहीं होगी। निश्चित अवधि के लिए काम कर रहे कर्मचारी को नियमित कर्मचारी के सामान सामाजिक सुरक्षा मिलेगा। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का नेशनल डेटाबेस बनाने के लिए पोर्टल पर पंजीकरण होगा। रोजगार के लिए अब 20 से अधिक श्रमिक वाले संस्थानों की रिक्तियों की रिपोर्ट ऑनलाइन देनी होगी।
- **व्यवसायिक सुरक्षा, स्वास्थ और कार्य स्थिति संहिता**– इस संहिता के अंतर्गत कई प्रावधान किए गए हैं जैसे प्रवासी मजदूर को हर साल एक बार घर जाने के लिए यात्रा भत्ता, मजदूरों को नियुक्ति पत्र, वर्ष में एक बार हेल्थ चेक अप, भवन निर्माण में लगे मजदूरों के लिए बनाए गए फंड से सहायता, प्रवासी मजदूरों को राशन, रात्रि में काम करने वाली महिला मजदूरों को सुरक्षा की व्यवस्था, प्रवासी मजदूरों की समस्याओं के निवारण के लिए हेल्प लाइन की सुविधा, प्रवासी मजदूरों का डेटा बेस तैयार करना आदि शामिल है।
- **औद्योगिक संबंध संहिता**– इस कोड में मुख्य रूप से मजदूर की नौकरी छूटने पर अटल बीमित कल्याण योजना का लाभ, नौकरी छूटने पर कौशल प्राप्ति के लिए 15 दिनों के वेतन की व्यवस्था, मजदूरों को ट्रिब्यूनल के जरिए त्वरित न्याय तथा ट्रेड यूनियन से संबंधित प्रावधान किए गए हैं।

श्रम संहिता के उपरोक्त चार स्तंभों से श्रमिकों और नियोक्ताओं दोनों के अधिकारों की आवश्यकता में संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। समूचे असंगठित और संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना एक क्रांतिकारी कदम के तौर पर देखा जा रहा है। निश्चय ही श्रमिकों को सम्मान के साथ सुरक्षा और सहूलियत प्रदान करती नए श्रम कानून को समग्रता से तैयार किया गया है। सशक्त और खुशहाल भारत में श्रमिकों के सशक्तिकरण में नए 04 श्रम कानून मील का पत्थर साबित होगा।

राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संविधान में राजभाषा हिंदी संबंधी प्रावधान

संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के संविधान में भाग 17 में अध्याय 1 से अध्याय 4 के अंतर्गत अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में संवैधानिक उपबंध दिए गए हैं। इनके अतिरिक्त भाग 5, अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) एवं भाग 6, अनुच्छेद 210 (विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा) में भी राजभाषा के विषय में संवैधानिक निर्देश हैं। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु भारत के संविधान में राजभाषा विषयक अनुच्छेदों को दृष्टिगत रखते हुए समय–समय पर अनेक आदेश, संकल्प, अधिनियम, नियम आदि जारी किए गए एवं आयोग और समितियों का गठन किया गया। राष्ट्रपति के आदेश 1952, 1955, तथा 1960 में आए। भाषा के विकास के लिए वर्ष 1955 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया। इसी तरह शब्दों के निर्माण पर कार्य करने के लिए शब्दावली आयोग का गठन हुआ। राजभाषा अधिनियम, 1963 (राजभाषा संशोधन अधिनियम, 1967 द्वारा यथा संशोधित, राजभाषा संकल्प 1968 तथा राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) बनाए गए।

भारत सरकार राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए समय समय पर विभिन्न समितियों के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन के प्रगति की समीक्षा करती रहती है और राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करती है।

राजभाषा हिंदी संबंधी समितियां

संसदीय राजभाषा समिति – इसका गठन 1957 में किया गया था। 1959 में समिति ने अपना पहला प्रतिवेदन राष्ट्रपति के समक्ष सौंपा था। इस समिति ने अभी तक 9 प्रतिवेदन राष्ट्रपति को सौंपा है। इससे पहले के सभी प्रतिवेदनों पर राष्ट्रपति के आदेश जारी हुए हैं। संसदीय समिति की तीन उप समिति गठित है।

केंद्रीय हिंदी समिति – हिंदी के विकास और प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा कार्यान्वित करने संबंधी कार्यक्रमों का समन्वय करने और नीति संबंधी दिशा–निर्देश जारी करने वाली यह सर्वोच्च समिति है। प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं तथा राजभाषा विभाग के सचिव इसके सदस्य सचिव होते हैं।

हिंदी सलाहकार समिति – सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने और इस संबंध में जनता के साथ अधिक संपर्क बनाए रखने के लिए हिंदी सलाहकार समितियां गठित की गई है जिसमें संबंधित मंत्रालय के मंत्री अध्यक्ष व लोकसभा तथा राज्यसभा के 2–2 सांसद व संसदीय राजभाषा समिति के 2 नामित सदस्य एवं गैर सरकारी सदस्य / विशिष्ट हिंदी विद्वान आदि होते हैं। संबंधित मंत्रालय के सचिव इसके सदस्य सचिव होते हैं। यह समिति संबंधित विभाग में हिंदी कार्यान्वयन की समीक्षा करने के बाद बेहतर कार्यान्वयन हेतु अपनी सिफारिश करती है।

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति – विभिन्न मंत्रालयों/विभागों तथा कार्यालयों में गठित विभिन्न राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के कार्यों में समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से यह समिति कार्य करती है। सचिव राजभाषा विभाग इसके अध्यक्ष होते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति – जिन नगरों में 10 या अधिक केंद्रीय कार्यालय हैं वहां नगर राजभाषा

कार्यान्वयन समिति के गठन की व्यवस्था है। वर्तमान में कुल 513 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित है। इस समिति का अध्यक्ष राजभाषा विभाग द्वारा नामित नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि का वरिष्ठतम अधिकारी होता है। सदस्य कार्यालयों के विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष इन समितियों की बैठक में हिस्सा लेते हैं।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति–राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक छोटे–बड़े कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति बनाई जाती है। संबंधित कार्यालय प्रधान इस समिति के अध्यक्ष होते हैं। यह समिति संबधित कार्यालय में हिंदी के प्रगति की समीक्षा करती है व आगे की तिमाही के लिए कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं। इसकी बैठक वर्ष में चार बार अर्थात प्रत्येक तिमाही में आयोजित की जाती है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति तीन 'प्र' पर आधारित है – प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा प्रशिक्षण।

विभिन्न समारोहों का आयोजन

कार्यालय में हिंदी का वातावरण बनाए रखने के लिए 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस, 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त बीच –बीच में संगोष्टि, व्याख्यान आदि भी रखे जाते हैं।

प्रोत्साहन योजनाएं – भारत सरकार ने राजभाषा के प्रभावी अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की है – जैसें हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना, राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना, मूल हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रोत्साहन योजना, हिंदी डिक्टेशन योजना, अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में काम–काज करने के लिए आशुलिपिकों व टंककों के लिए प्रोत्साहन योजना, हिंदी टंकण/भाषा/आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए नगद प्रोत्साहन योजना एवं वेतन वृद्धि, राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, राजभाषा गौरव पुरस्कार आदि। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है।

प्रशिक्षण – हिंदी में कार्य करने के लिए हिंदी भाषा/हिंदी शब्द संसाधन व टंकण/हिंदी आशुलिपि/कंप्यूटर आदि के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इसके साथ ही प्रत्येक कार्यालय को वर्ष में चार कार्यशाला आयोजित कर कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का भी निर्देश है।

हिंदी पदों का सृजन – राजभाषा विभाग ने प्रत्येक कार्यालय में अनुवाद व राजभाषा कार्यान्वयन के लिए न्यूनतम हिंदी पदों का मानक तय किया है ताकि कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिल सके।

वार्षिक कार्यक्रम – राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है जिसमें हिंदी के कार्यों का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है।

जांच बिंदु – राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वय के लिए जांच बिंदु स्थापित किए गए हैं।

गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन – हिंदी भाषा को बढ़ावा देने तथा इसमें कार्मिकों की रूचि पैदा करने के लिए कार्यालय द्वारा हिंदी में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है।

कंप्यूटर में हिंदी – अब जबकि देश डिजीटलीकरण की ओर बढ़ रहा है तो फाइलों के साथ बहुत सारे कार्य कंप्यूटर के माध्यम से किए जा रहे हैं। यूनीकोड द्वारा हिंदी का प्रयोग कार्यालयों में सरलता से किया जा रहा है। राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई सारे हिंदी के साफ्टवेयर बनवाए हैं जैसे – श्रूतलेखन सॉफ्टवेयर, मंत्र राजभाषा, कंठस्थ, प्रवाचक आदि। इसके साथ ही हिंदी भाषा के प्रशिक्षण के लिए लीला साफ्टवेयर भी तैयार करवाया गया है। राजभाषा विभाग ने ई–महाशब्दकोष ऑनलाइन भी तैयार किया है। जिसे प्ले स्टोर से मोबाईल पर डाउनलोड कर प्रयोग किया जा सकता है। शब्दावली आयोग द्वारा भी ऑनलाइन शब्दकोष तैयार किया गया है।

इस तरह से हमने राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा कार्यान्वयन को संक्षिप्त में जाना। केंद्रीय सरकार के कर्मचारी के रूप में हमें अपने कार्यालयीन कार्य का निपटान राजभाषा हिंदी में करना चाहिए। फाइलों पर हिंदी प्रयोग के साथ – साथ बातचीत में भी हिंदी को अपनाएं। कम्प्यूटर पर जहां हिंदी भाषा का विकल्प व सुविधा है वहां हिंदी का ही प्रयोग करना चाहिए। आइए राजभाषा कार्यान्वयन में हम भी अपना योगदान दें।

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

फोटोग्राफी – सुकोमल कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक

अरविंद कुमार मंगलम
सहायक

वर्तमान में कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

आज जब हम चहुँओर व्याप्त सामाजिक जड़ता तथा अराजकता की ओर उन्मुख होते हैं तब व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद करने के लिए युगपुरुष की आवश्यकता महसूस करते है। इस संसार में मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये जिन–जिन महापुरूषों ने इस धराधाम पर जन्म लेकर संघर्ष किया और अपने लक्ष्य में सफल हुए उनकी प्रासंगिकता प्रत्येक युग में बनी रहती है तथा तब तक बनी रहेगी जब तक मानव जाति का अस्तित्व बना रहेगा। इसी संदर्भ में कबीर का कालजयी व्यक्तित्व इस समय हमारे लिए ज्योतिपुंज है। आज से लगभग 610 वर्ष पूर्व 1398 ई. में काशी में जन्मे कबीर आजीवन अपने अथक प्रयासों से समाज का मार्गदर्शन करते रहे। वे जुलाहा कर्म को अपनाकर गृहस्थ जीवन के साथ संत बनकर 'समाज सुधार' का कार्य भी करते रहे। कबीर ने जन्म, धर्म, जाति या कुलगत उच्चता के बजाय कर्म तथा विचारों की उच्चता को प्रतिष्ठा दी। उन्होंने एक आदर्श समाज का सपना देखा जो वर्णभेद जैसी मानव–मानव को अलग करने वाली परम्पराओं का खण्डन करता है। आज जब जाति का बोलबाला है, तब कबीर द्वारा जातिवाद के विरुद्ध की गई इस एकतरफा लड़ाई की याद आती है। वे आमजन की आवाज थे तथा अंधकारयुग के जन नेता थे।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान,
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।

धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक भारत के लिए हमें आदर्श समाज की रूपरेखा कबीर के संदर्शों में मिलती है। हिन्दू समाज द्वारा बहिष्कृत तथा मुस्लिम समाज द्वारा तिरस्कृत कबीर ने ईश्वरीय एकता की बात कही। उन्होंने धर्म के नाम पर भेदभाव तथा ईश्वर के नाम पर लड़ाई का तार्किक खण्डन किया।

हिन्दु कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,
आपस में दोउ लड़ी–लड़ी मुए,मरम न कोउ जाना।।

कबीर के राम निर्गुण एवं निराकार ईश्वर थे। उन्होंने उसे सबका प्रभु बनाया तथा मानव धर्म की प्रतिष्ठा की। उन्होंने आस्तिकों के ईश्वर, ईश्वरीय ग्रंथ, उपासना स्थल तथा अनुयायियों के नाम पर विभेद को नकारा तथा धार्मिक समन्वय की अवधारणा प्रतिपादित की। आज के धार्मिक वैमनस्य के वातावरण में कबीर के विचार प्रासंगिक हैं कि '**हिन्दू उसे राम कहता है। मुसलमान खुदा कहता है। तू उसकी परवाह न कर तब काबा काशी हो जाएगा और राम रहीम हो जाएगा।**' यही कारण है कि जब कबीर की मृत्यु हुई तब उनके शव पर दावा प्रत्येक धर्मानुयायी ने किया तथा मगहर में उसका स्मारक धार्मिक समन्वय की मिसाल है।

कबीर अपने समय के क्रांतिकारी संत थे। उन्होंने आडम्बरों, कुरीतियों, जड़ता–मूढ़ता एवं अंधविश्वासों का

किसी विवाद में हम जैसे ही क्रोधित होते हैं, हम सच का मार्ग छोड़ देते हैं और अपने आप को सही साबित करने के प्रयास में लग जाते हैं। –महात्मा बुद्ध

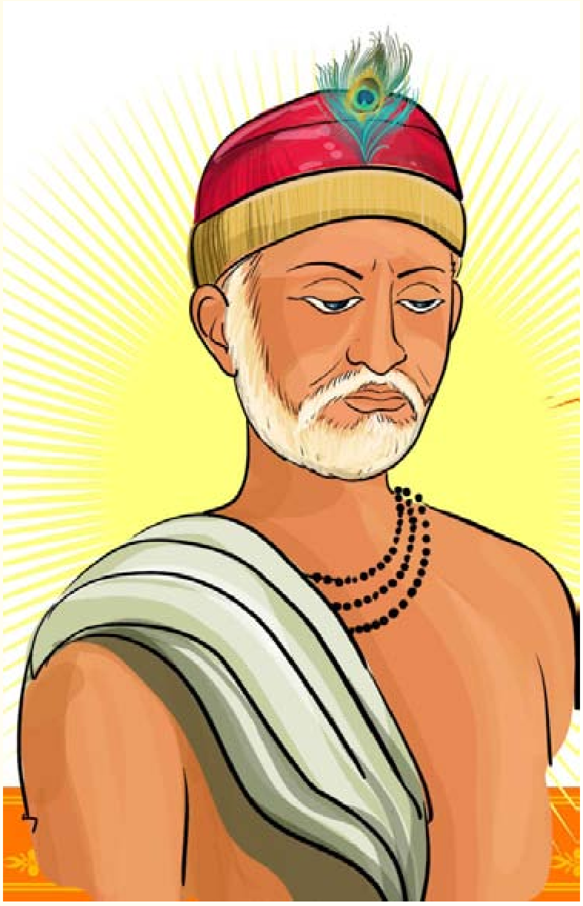

तर्कपूर्ण खण्डन किया। कबीर का अपने युग के प्रति यथार्थ बोध इतना था कि उन्होंने हर एक परम्परा, रूढ़, कुरीति तथा पाखण्ड को यथार्थ के धरातल पर खारिज किया। अबुल फजल ने आइने अकबरी में लिखा है कि ''कबीर ने समाज के सड़े–गले रीति रिवाजों को नकार दिया। कबीर ने समाज सुधार के लिए कोड़े खाए तो व्यंग्य तथा हँसी–ठिठौली द्वारा भी जनमानस में सुधार के प्रति सोच विकसित की।'' उन्होंने आलोचना के साथ सृजन की रूपरेखा रखी। कबीर अराजकता, सामन्तवाद तथा उथल–पुथल के दौर में क्रान्तिकारी स्वप्नकार हैं। वे स्वभाव से संत थे, लेकिन प्रकृति से उपदेशक। उन्होंने अंधविश्वासों का उपहास कर ठीक निशाने पर चोट पहुँचाई। उन्होंने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, अवतारवाद एवं कर्मकाण्डों का विरोध किया तथा ईश्वर और व्यक्ति के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार किया। उन्होंने हर रूढ़ को खारिज किया जो मानव–मानव में भेद कराती थी। आज के दौर में जब भौतिक साधनों हेतु भ्रष्टाचार, लूट–खसोट, मिलावटखोरी जैसे अपराध मानवता को झकझोर रहे हैं तब कबीर के ये विचार अति प्रासंगिक हैं–

सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाये।।

अर्थात् कबीर संग्रहवाद के बजाय अपरिग्रह को महत्त्व देते हैं। कबीर ने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित की। उन्होंने धैर्य, सहिष्णुता, कर्मयोग, गुरु का सम्मान, प्रेम, मानवता, आत्मा की पवित्रता, दीन–दुखियों की सेवा, नैतिकता के पालन को मानवीय कर्त्तव्य माना। आज 21वीं सदी के विश्व में भारत जहाँ अपनी पहचान स्थापित करना चाहता है, वहाँ स्थानीय समस्याएँ, नक्सलवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद के दौर में एक 'समग्र भारतीय व्यक्तित्व' के रूप में कबीर हमारे व्योम में जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज आते हैं, जिन्हें अनिवार्यतः हिंदी व अंग्रेजी में एक साथ तैयार, निष्पादित एवं जारी किया जाना चाहिए –

- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज दृ सामान्य आदेश (General Orders) : सामान्य आदेशों से अभिप्राय है ऐसे आदेश, अनुदेश, निर्णय, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, परिपत्र जो कर्मचारियों के समूह के लिए हों। 2. संकल्प (Resolution) 3.नियम (Rule) 4. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques) 5. सूचना (Notice) 6. निविदा प्ररूप (Tender Forms) 7. संविदा (Contract) 8. करार (Agreement) 9. अनुज्ञप्ति (Licence) 10. अनुज्ञा पत्र (Permit) 11. अधिसूचना (Notification) 12. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports) 13. संसद के प्रस्तुति हेतु प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन (AdministrativeAnd other reports to be laid in parliament) 14. संसद में प्रस्तुति हेतु राजकीय कागजात (Official papers to be laid in parliament)

"हमारे दैनंदिन जीवन में हिन्दी का महत्व"

विकाश कुमार, सहायक

हमारे दैनंदिन जीवन में 'हिन्दी का महत्व' शीर्षक पर निबंध लिखने से पहले हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हिन्दी क्या है और इसका इतिहास क्या है? हिन्दी :–हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है, एवं भारत की राजभाषा है जिसकी लिपी "देवनागरी" है और जिसे भारतीय संविधान सभा ने 14 सिंतम्बर, 1949 को अधिकारिक भाषा के रूप में चुना, इसी वजह से 14 सितम्बर को हर साल "हिन्दी दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

1805 ई0 मे छपी लल्लू लाल की किताब "प्रेम सागर" को हिन्दी की पहली किताब मानी जाती है और भारतेन्दु हरिशचन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का पितामह कहा जाता है फिर भी केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा "अंग्रेजी" है और देश में इसी भाषा का कार्यालयों/विभागों और अन्य क्षेत्रों मे अधिक बोलबाला है। हिन्दी, हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप हैं जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फारसी शब्द कम है। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की "राजभाषा" है और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानी वाली भाषा है।

हालांकी हिन्दी भारत की "राष्ट्रभाषा" नहीं है, क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया था। चीनी (मंदारीन) के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी और इसकी बोलियां सम्पूर्ण भारत के विभिन्न राज्यों में बोली जाती है। सुखद बात यह है कि हिन्दी बोलने वालों का दायरा बढ़ा है जहाँ 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 42 करोड़ 60 लाख (41.03 प्रतिशत) लोगों द्वारा बोली जाती थी वह अब 2011 की जनगणना के अनुसार 50 करोड़ 22 लाख (43.63 प्रतिशत) लोगों द्वारा बोली जाने लगी है। इसके अलावा विश्व के अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते हैं, पढ़ते हैं, और लिखते हैं।

फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सुरीनाम, पाकिस्तान, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात की जनता भी हिन्दी बोलती है। फरवरी, 2019 में अबुधाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली। अब रही बात हमारे दैनंदिन जीवन मे हिन्दी की महत्व की बात तो हिन्दी भारत में सम्पर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में आमतौर पर एक सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। हिन्दी यूरोपीय भाषा परिवार के अंदर आती है। हिन्दी की सबसे बडी विशेषता यह है कि यह जो बोली जाती है वही लिखी और पढ़ी भी जाती है। जो अन्य भाषाओं के संदर्भ में नहीं है। विशेषकर अंग्रेजी के संबंध में जो आज के आधुनिक दौर में यानि विशेष कर भारत के कुछ खास वर्गो के लोगों के बारे मे जो हिन्दी बोलने में शर्मीदंगी महसूस करते हैं और अंग्रेजी बोलना ज्यादा पंसद करते हैं। दोष हम जैसे लोगों का भी है कि हम अंग्रेजी बोलने वालों को ज्यादा पढ़ा लिखा और ज्ञानी समझते है, हिन्दी वालों की उपेक्षा करते हैं।

"हिन्दी" सिर्फ भाषा नहीं बल्कि हिन्दी के द्वारा भारत के लोग एक दूसरे से काफी अच्छी तरह से जुड़ सकते है और देश की तरक्की को एक नई ऊँचाईयों तक ले जा सकते है। लोगों का ऐसा मानना है कि हिन्दी जाने बिना भी बहुत सारा काम हो सकता है। भारत के लोग कभी भी अंग्रेजी को मुख्य भाषा के रूप में इस्तेमाल नहीं कर सकते है। हिन्दी भाषा भारत के जन–मन मे पैठ बना चुकी है। भारत के लोग बचपन से ही इसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि यह एक सरल भाषा है और इसका इस्तेमाल करना बहुत आसान है।

भारत मे हिन्दी के बिना बहुत सारा काम नहीं हो सकता है क्योंकि यहां पर 70 से 80 प्रतिशत लोग अंग्रेजी नहीं

जानते है। अगर उन्हें संवाद करना हो तो हिन्दी जानना ही पड़ता है। हिन्दी सीखने में ज्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता है। यहां तक कि दक्षिण भारत के लोग भी हिंदी फिल्म देखकर हिंदी सीख जाते है। भारत के अधिकांश लोगों की "मातृभाषा" हिंदी होने की वजह से उन्हें बोलने और समझने में कभी समस्या नहीं होती है। बहुत सारे लोग बिना स्कूल गए भी बहुत अच्छी हिंदी बोल लेते है। हिंदी मे शब्दों की भरमार है। इस भाषा में भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त किया जा सकता है। अगर लोगों को लगता है कि हिंदी का भविष्य अच्छा नहीं है तो ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है हिंदी का महत्व स्थापित हो गया है। यह भाषा स्वाधीनता संग्राम के समय समूचे देश को आपस मे जोड़ने वाली सबसे सशक्त संपर्क भाषा बन गई थी। उस दौर के सभी नेताओं (जैसे– सुभाष चंद्र बोस, विनोवा भावे, गांधीजी ईत्यादि) का मानना था कि अगर कोई भारतीय भाषा देशवासियों को एक–जुट करने मे सहायक बन सकती है तो वह "हिन्दी" ही है।

हिन्दी राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त करती है और यह धागा हमें और आपको एक सूत्र में मजबूती से बांध सकती है। आईए अब बात करते है हिंदी के भविष्य के बारें में तो हम सबको यह जानकर बहुत हर्ष होगा कि हिंदी का भविष्य आने वाले दिनों मे काफी उन्नत होगा। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वर्ष 2050 तक हिंदी विश्व की सबसे ताकतवर भाषाओं मे से एक होगी। वर्ल्ड ईकोनॉमिक फोरम ने पांच पावर भाषा इन्डेक्स तैयार किया है जिसमे यह टॉप 10 में शामिल है और दसवें नम्बर पर है। इसको एक पैमाने पर तैयार किया जा रहा है जो आर्थिक, व्यापारिक इत्यादि महत्वों पर आधारित है। पावर भाषा इन्डेक्स में हिंदी के दसवें नंबर पर होने का कारण यह है कि भारत ने अपने पाचं हजार साल के इतिहास में कभी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया और दूसरे देशों में उपनिवेश भी स्थापित नहीं किया।

"अंग्रेजी" पावर भाषा इंडेक्स में पहले नबंर पर है। दूसरे पर चीन की भाषा "मंदारिन"। चीन की भाषा इस इंडेक्स मे दूसरे नंबर पर इसलिए है कि चीन दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है और वहां के 140 करोड़ जनता ज्यादा चीनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। क्योंकि चीन मे ट्वीटर, फेसबुक और विकीपिडिया जैसे साईट पर प्रतिबंध हैं। हिंदी को इंटरनेट से नई ताकत मिली है। आपको यह जानकर हैरानी होगी की देश की डिजीटल वर्ल्ड में अग्रेंजी की तुलना मे हिंदी की साम्रगी की मांग पांच गुना तेजी से बढ़ रही है। भारतीय युवाओं के स्मार्ट फोन मे औसतम 32 ऐप मे से आठ या नौ हिंदी के होते हैं। भारतीय युवा 93 प्रतिशत यू–ट्यूब हिंदी मे देखते हैं।

डिजिटल वर्ल्ड मे हिंदी को बढ़ाने में "यूनीकोड" ने अहम भूमिका निभायी है। अभी इंटरनेट पर हिंदी मे 15 से ज्यादा सर्च इंजन है। डिजीटल इंडिया में हिंदी की मांग 94 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। 21 प्रतिशत भारतीय इटंरनेट पर हिंदी का इस्तेमाल करना चाहते है फिर भी हिंदी के सामने बड़ी चुनौतियां है जिसे पार कर पाना काफी मुश्किल है। इंटरनेट पर 0.04 प्रतिशत ही हिंदी वेबसाईट है। चलिए फिर भी आने वाले दिनों में हिंदी का भविष्य सुनहरा लग रहा है। हिंदी अब अर्थ व्यवस्था और बाजार की भाषा बनने लगी है। दुनियां के 176 विश्वविद्यालयों मे हिंदी पढ़ाई जाने लगी है। विदेशों मे 25 से ज्यादा अखबार और पत्रिकाएं हिंदी मे मिलते है यहां तक की हिंदी शब्द "अवतार" पर हॉलीवुड मे इस शीर्षक पर एक फिल्म भी बनी है।

यह ही नहीं पिछले वर्ष आक्सफोर्ड डिक्शनरी मे 500 नये शब्द शामिल किए गये थे उनमें से 240 शब्द हिंदी के थे। अब पूरी दूनियां में हिंदी का महत्व बढ़ रहा है। इस बात ने हमें उम्मीदों से भर दिया है कि अगर आप और हम अपने स्तर पर हिंदी को बढ़ाने का काम करें तो यह विश्व की एक ताकतवर भाषा बन सकती है। इसी संदर्भ में हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है वह कभी उन्नत राष्ट्र नहीं बन सकता। तो आईए हम सब मिलकर हिंदी भाषा को उस दिशा में बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

‘हिंदी’ के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

विरेंद्र चौहान
प्रवर श्रेणी लिपिक

01	हिंदी के प्रथम प्रचारक	– दयानंद सरस्वती
02	हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना किसने की है	– मदन मोहन मालवीय
03	राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रचार के लिए गठित प्रथम साहित्यिक संस्था	– नागरी प्रचारणी सभा
04	अप भ्रंश का वाल्मीकि कहा जाता है	– स्वयंभू
05	वाणी का डिक्टैटर कहा जाता है	– कबीर दास
06	अप भ्रंश का व्यास कहा जाता है	– पुष्पदत्त
07	लोकनायक कहा जाता है	– तुलसीदास
08	आधुनिक हिंदी के बापू	– सियाराम शरण गुप्त
09	एक भारतीय आत्मा के नाम से जाना जाता है	– माखन लाल चतुर्वेदी
10	आधुनिक सूरदास तथा कवि सम्राट के नाम से जाना जाता है	– अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध
11	आधुनिक भारत का राम चरितमानस	– कामायनी
12	हिंदी व्याकरण के पितामह	– प. कामता प्रसाद
13	विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है	– 10 जनवरी
14	हिमाचल का प्रथम हिंदी कवि	– चंद्रधर शर्मा गलेरी
15	आधुनिक युग की मीरा	– महादेवी वर्मा
16	वीणा पानी के नाम से जाना जाता है	– महादेवी वर्मा
17	राष्ट्र कवि के नाम से जाना जाता है	– मैथिली शरण गुप्त
18	प्रकृति के सुकुमार कवि	– सुमित्रानंदन पंत
19	आधुनिक युग के कवि	– नागार्जुन
20	पहला ज्ञान पीठ पुरस्कार मिला था	– सुमित्रानंद पंत
21	प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	– नागपुर, 1975
22	हिमाचल की प्रथम हिंदी पत्रिका	– शिमला अखबार

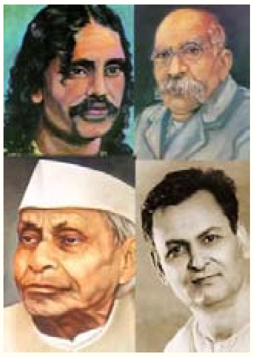

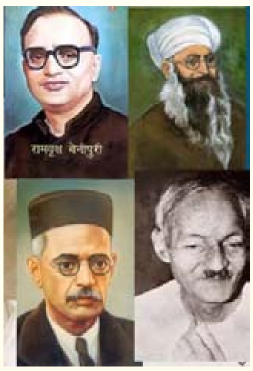

फुर्सत ही कहाँ है .....

चाहत गोयल,
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

ये फुर्सत हमें किस दहलीज पर ले आई
कभी हमें भी फुर्सत हुआ करती थी जिंदगी में पर
अब तो फुर्सत के बारे में लिखने के लिए भी फुर्सत ही कहाँ है।

दिन रात पैसा तो कमाना है, पर
चैन की नींद सोने की, फुर्सत ही कहाँ है

सोशल मीडिया पर तो हजारों दोस्त बनाने हैं, पर
असल जिंदगी में दोस्ती निभाने की फुर्सत ही कहाँ है

माँ के हाथ का खाना तो बेहद पसंद है, पर
माँ के पास बैठ कर दो बातें करने की फुर्सत ही कहाँ है

पिता के सिर पर शौक तो सबको पूरे करने हैं पर
उनके काम में हाथ बंटाने को फुर्सत ही कहाँ है

परिवार से दूर रहने का गम तो है, पर
दिल हल्का करने को आँसू बहाने की फुर्सत ही कहाँ है

अपने जन्मदिन पर दावत तो सबको देनी है, पर
माँ बाप के जन्मदिन पर मिलकर बधाई देने की फुर्सत ही कहाँ है

भगवान से बिन मांगे सब चाहिए, पर
दो पल उनको याद करने की फुर्सत ही कहाँ है

ऐ जिंदगी अब तू ही बता,
क्या होगा हमारा, कि
हर पल कम होती इन साँसों में
सांस लेने की फुर्सत ही कहाँ है

वो पतंग

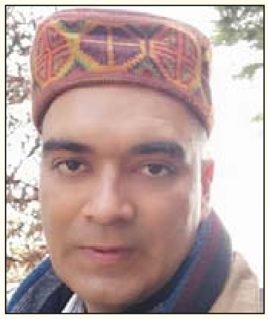

अंशुल
सहायक

डा. समीर हैलीकॉप्टर में बैठकर उड़ते हुए कुछ सोच रहे थे कि तभी सामने बैठे हुए सेना के कर्नल ने उनसे पूछा,"डा. साहब कैसा लग रहा है?" उन्होंने कर्नल की तरफ देख कर बस हल्के से मुस्करा भर दिया मानो कह रहे हो, इसी दिन का तो मुझे इंतजार था। सच में इसी दिन के लिए तो उन्होंने आज तक जिंदगी में सब कुछ किया था।

डा. साहब एक महान भाषा वैज्ञानिक तथा भाषाविद थे जिनकी न केवल आधुनिक भाषाओं बल्कि ऐतिहासिक भाषाओं के विज्ञान पर भी मजबूत पकड़ थी। वे विश्वविद्यालय में प्रोफैसर के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने कई सालों से एलियनों से संवाद करने हेतु कई तरह की भाषाओं, आवाजों तथा संकेतों पर शोध किया था तथा ऐसे कई माध्यमों का विकास किया था। आज उनके सालों की मेहनत को वास्तविक पैमाने पर मापने का दिन है।

कल रात को राजस्थान के रेगिस्तान में एक बहुत बड़ा अंतरिक्ष यान उतरा है। सेना व वायु सेना ने लैंडिंग के आस–पास के क्षेत्र को सील कर दिया है। सेना के बड़े अधिकारियों ने अंतरिक्ष यान में मौजूद एलियनों के साथ संपर्क करने की कोशिश की पर भाषा अवरोध के कारण वे एक–दूसरे की बात समझ नहीं पाए। इस अवरोध को दूर करने के लिए डा. समीर को उनकी सेवाएं प्रदान करने का आग्रह किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

हैलिकॉप्टर उड़ा जा रहा था तथा डा. साहब सोच में डूबे थे,उन्हें आज भी वह दिन याद है,बचपन में जब वो एलियनों से जवाब न मिलने पर इतने दुखी हो गए थे कि उन्होंने खाना–पीना तक छोड़ दिया था और वो बीमार हो गए थे। एलियनों के प्रति लगाव उनको बचपन से ही हो गया था। किसी चीज के अस्तित्व के बारे में पता न होते हुए भी उस चीज के प्रति असीम लगाव होना आम समझ से परे की बात लगती है, लेकिन था बिल्कुल ऐसा ही। एक बार उनके पिता जी ने उनको एलियनों की कहानी सुनाई तथा उन्हें विस्तार से एलियनों के बारे में बताया कि ऐसे कोई जीव जो हमारी धरती के अलावा किसी और ग्रह,सौरमंडल या आकाशगंगा में कहीं भी हों,वे हमारे लिए ऐलियन हैं। एलियन किसी भी रंग, रूप तथा आकार के हो सकते हैं। हमारा ब्रह्मांड इतना विशाल है कि यहां कहीं न कहीं,किसी न किसी रूप में एलियन जरूर होंगे। बस बात है तो उन तक पहुंचने की या उनके हम तक पहुंचने की। अब ये कैसे संभव होगा ये कोई नहीं जानता। नन्हा सैमी अपने पिता जी की बातों से इतना प्रभावित हुआ कि बरबस ही बोल दिया,"मैं ऐलियंस तक सबसे पहले संदेश पहुंचाउंगा,मैं सबसे पहले उनसे बात करुंगा।" उसके पिता जी यह सुनकर मुस्कुरा दिए तथा बोले,"हां,हां क्यों नहीं"। लेकिन उनको क्या पता था कि सैमी तो मन बना चुका था तथा इसके लिए मन ही मन योजना भी बनाने लग गया था। वो उस शाम को बाजार से कुछ पतंगें लेकर आया। उसने एलियंस के लिए कुछ संदेश तैयार कर रखे थे जिन्हें वह पतंग के जरिए अंतरिक्ष में भेजना चाहता था। वो एक पतंग पर संदेश लिखने लगा लेकन थोड़ी देर बाद एका–एक उसको ख्याल आया कि एलियंस हिंदी को कैसे समझ पाएंगे। उसके छोटे से दिमाग के लिए यह एक बहुत बड़ा ख्याल था। कुछ सोच–विचार के बाद उसने निर्णय लिया कि वह आकृतियों तथा चिन्हों के माध्यम से एलियंस के लिए संदेश भेजेगा। उसने धरती का चित्र पतंग पर उकेरा तथा उसके आगे अपने शहर के कुछ स्मारकों के चित्र भी बनाए। इसके बाद सैमी पतंग पर अपना फोटो चिपकाने जा रहा था लेकिन फोटो को देखते ही उसको लगा कि

फोटो में उसका स्वभाव कुछ गंभीर व गुस्सैल प्रवृति का प्रतीत हो रहा था। वास्तव में जब वो फोटो खिचवाई गई थी तो वह गुस्से में ही था क्योंकि उसके जबरदस्ती बाल कटवा कर उसको फोटो खिंचवाने के लिए बिठाया गया था। उसने यह सीख रखा था कि पहली बार जब किसी से मिलें तो मुस्कुराते हुए मिलना चाहिए जिससे मिलने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़े, और यहां तो मामला पूरी धरती का एलियंस के उपर प्रभाव का था। सैमी किसी भी स्थिति में धरती की साख गिराना नहीं चाहता था पर क्या करे उसके पास अभी केवल वही एक फोटो था। ऐसी स्थित में एक ही रास्ता बचा था कि फोटो नयी खिंचवाई जाए। सैमी अगली सुबह जल्दी से नहा धोकर और साफ–सुथरे कपड़े पहनकर अपनी एक सुंदर सी मुस्कुराती हुई फोटो खिंचवा कर ले आया। अब उसको चिपकाना भर बाकी था और उसकी संदेशवाहक पतंग तैयार हो जाती। बिना समय गंवाए सैमी ने फोटो चिपकाई और पतंग के प्रक्षेपण के लिए चल पड़ा। जैसे ही पतंग एक उंचाई तक चली गई तो उसने उसे काट दिया। पतंग अब आसमान की ओर लहराते हुए जा रही थी। सैमी उसे अंत तक देखे जा रहा था,उसकी आखों में गहरा विश्वास था कि इस संदेश का जवाब जरूर आएगा। इसके बाद भी उसने ऐसी कई संदेशवाहक पतंगे भेजी लेकिन उनका जवाब न तो कभी आना था और न ही आया।

सैमी इससे निराश होकर धीरे–धीरे अवसादग्रस्त हो गया। उसने खाना–पीना तक कम कर दिया जिससे वह बीमार पड़ गया। एक रात उसको बहुत तेज बुखार था। उसकी मां उसके सिर पर पट्टियां बदल रही थी जब वह धीरे–धीरे से मुंह में कुछ बुद–बुदा रह था। वो पूछ रहा था कि क्या एलियंस से उसके पतंग संदेशों का कोई जवाब मिला है कि नहीं। जब उसकी मां ने पूछा कि वह कौन से संदेशों की बात कर रहा है तो वह चुप हो गया। उसकी मां ने वह बात उसके पिता जी को बताई तो उन्हें कुछ–कुछ बात समझ में आने लगी। वो समझ गए थे कि उन्हें क्या करना है।

अगली सुबह उसके पिता जी एक फटी हुई पतंग लेकर सैंमी के कमरे में पहुंचे और उसको उठाते हुए बोले कि आज–कल कैसे अजीब–अजीब से पतंगों के डिजाइन बनाए जाते हैं तथा उनपे क्या लिखा जाता है कुछ समझ नहीं आता है। अब इसे ही देख लो यह एक पतंग सुबह ही आंगन में पड़ी हुई मिली, इसपे बनाया और लिखा कुछ समझ नहीं आ रहा है। पतंग देखते ही सैमी की आंखों में चमक आ गई। वो समझ गया कि एलियंस नें उसको जवाब भेजा है। वह बैठकर उसको समझने की कोशिश करने लगा। उसने जूस पीया तथा उसके बाद दवाई भी खाई। उसमें एक नई उर्जा का संचार हो गया और एक दो दिन में वह ठीक हो गया। एक दिन वह अपने पिता जी के पास गया और उनको बताया कि यह एलियंस का उसके संदेशों का जवाब है। उसने पतंग पर दर्शायी गई पहली आकृति को दिखाते हुए बोला कि यह एलियंस का ग्रह है तथा अगली धुंधली आकृति , वह एलियन है। उसके बाद वह आकृति कुछ चिन्हों के साथ गहन सोच–विचार की अवस्था में बैठी थी। सैमी ने बताया कि एलियन मुझसे वार्तालाप करने के लिए गहन अध्ययन कर रहे हैं तथा उसे भी बहुत अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि वह जब मिलें तो आसानी से एक–दूसरे को समझ सकें। इसके लिए उसको अच्छी तरह से पढ़ाई लिखाई करनी होगी। सैमी के पिता जी बहुत खुश हुए और इश्वर का बहुत–बहुत धन्यवाद व्यक्त किया कि कैसे सैमी ने पतंग पर बने चित्रों का सकरात्मक मतलब निकाला। वे आशावान थे कि धीरे–धीरे बड़े होने के साथ–साथ सैमी समझ जाएगा लेकिन सैमी के जुनून ने उसे कभी उसे अपना सपना बदलने नहीं दिया और उसने उसी अनूठे क्षेत्र में अपना न केवल अपना कैरियर बनाया बल्कि आज अपने एलियंस से मिलने और उनसे संवाद करने के सपने को भी पूरा करने जा रहा है।

हैलिकॉपटर लैंड करता है। डा. समीर एका–एक अपने ख्यालों से बाहर आते हैं। उनको कर्नल द्वारा जैवीय सुरक्षा हेतु सूट तथा उपकरण दिए जाते हैं जिन्हें पहनकर वे अंतरिक्ष यान की तरफ बढते हैं। कुछ देर में यान का दरवाजा खुलता है और वह अंदर प्रवेश कर जाते हैं, प्रथम व्यक्ति के रूप में जो एलियंस से संवाद स्थापित करेगा, पर शायद वो प्रथम व्यक्ति तो बहुत पहले ही बन चुके थे।

प्रकृति के साथ सामंजस्य

मनोज तंवर
प्रवर श्रेणी लिपिक

ये लम्हें भी गुजर जाएंगे वो वक्त भी गुजर गया
बीती बातों का बस इतना फलसफा रह गया।
कौन कब कैसे और कहाँ बिछड़ गया
ये न पता न वक्त ने पता लगने दिया।।
ये ढ़लती शाम हर रोज मेरी आँखों को चुँधिया जाती है
और कोयल की कू कू नया राग छेड़ जाती है।
सुबह की लालिमा फिर से जीवट होने को कहती है
और पक्षियों की चहचहाहट संदेश कह जाती है।।
चल रे पथिक देख सवेरा हुआ है
अंधकार को चीर कर उजियारा हुआ है।
बहुत सुने है तेरी हिम्मत के किस्से
आज प्रकृति ने तुझे फिर ललकारा है।।
कहते हैं तू बड़ी जिंदादिली से जीता है
फिर आज क्यूँ अधीर होता है।
माना ये लहरें बहुत प्रचंड है
पर तेरी निष्ठा भी तो अखंड है।।
रुक अभी लहरों की थाह पा ले
वर्तमान से भविष्य की कुछ सीख ले।
बहुत कुछ सीखा है हमने तुझ से
कुछ सबक हमसे भी तो पा ले।।
धीरवान वीरवान ए पथिक
इस तूफान से पार पा ले।
इस तूफान से पार प ले।।

कभी तो सवेरा होगा

नवजोत शर्मा,
प्रवर श्रेणी लिपिक

इस अंधकार को तू पार कर
न हार तू बस चलता चल
मत विचलित हो बस हँसता चल
कभी तो सवेरा होगा।

पग है टेढ़ा–मेढ़ा,
हर राह पर काँटों का सवेरा,
मत छोड़ आस तू
मत तोड़ सांस तू
बस चलता चल,
कभी तो सवेरा होगा।

बन निडर न भाग तू
इस अंधकार को कर पार तू
समय की चल को भाँप तू
बस चलता चल
कभी तो सवेरा होगा।

हर पग पर बुराई का साया
हर मोड़ पर आतंक का छाया
चल हिम्मत से, न हार तू
बस चलता चल
कभी तो सवेरा होगा।

खबर है

अभिषेक तिवारी
प्रवर श्रेणी लिपिक

सुना है डर को खबर है
कौन है जो उसको महसूस करते ही बेसबर है
अजीब सा एक कहर है
कोरोना, भला ये कैसा जहर है

चेहरे पे मास्क हर प्रहर है
हाथों पे सैनिटाइजर मलता पूरा ये शहर है
फेफड़ों पे करता ये प्रहार है
सांसें लेना भी अब दुश्वार है

दिन ब दिन बढ़ते मरीजों की संख्या का अंबार है
विश्व भर ढूँढता इसका उपचार है
सोशल डिस्टेंसिंग मना रहे सब अपने द्वार है
ठप्प पड़े दुनियां भर के कारोबार है

डॉक्टर, पुलिस, सफाई कर्मचारी और बैंकर निभा रहे
अपना फर्ज इन्हे नमन शत शत बार है
इससे लड़ने को तैयार सारा संसार
वैक्सीन का सबको इंतजार है

आओ, बताएँ इस कोरोना को
हमारी एकता ही इस बीमारी पे सबसे बड़ा वार है

कार्यालय गतिविधियां

विराकास बैठक

सर्तकता जागरूकता सप्ताह

हिंदी टंकण प्रशिक्षण

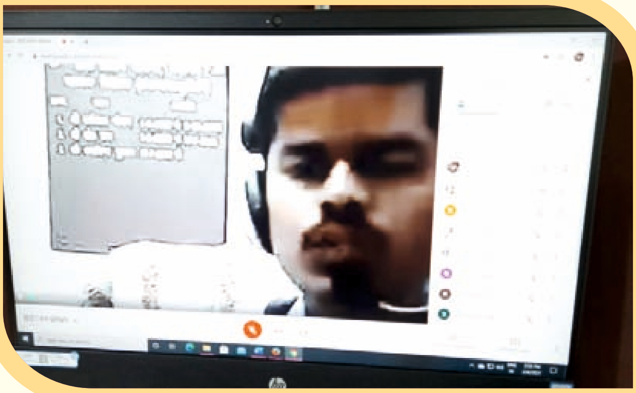

हिंदी टंकण प्रशिक्षण देते हुए सहायक निदेशक (टं/आ) श्री अरविंद कुमार

कोरोना महामारी का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव और इन कुप्रभावों का निराकरण!

डॉ. राहुल शर्मा
चिकित्सा सर्तकता अधिकारी

यदि आप एक राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो राष्ट्र के नागरिकों को मानसिक रूप से मजबूत बनाएं। हम वर्तमान में कोरोना महामारी के बीच में हैं। यह हम सभी के लिए भय, चिंता और तनाव का माहौल लेकर आया है। एक इंसान की पहचान उसके काम से होती है, परंतु इस महामारी ने लोगों की नौकरियां, काम, व्यवसाय को बुरी तरह से प्रभावित किया है। साथ ही विद्यार्थियों की पढ़ाई पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इस महामारी ने पूरी मानवता और अर्थव्यवस्था को हिला कर रख दिया। ऐसी महामारी के दौरान सीमित संसाधनों के बीच, मानसिक स्वास्थ्य पर हमारा ध्यान समय रहते नहीं जाता है।

इस तनाव के माहौल में आने वाली परेशानियां कुछ इस प्रकार रहती है:–

- भय, क्रोध, उदासी, चिंता या निराशा की भावना
- भूख, ऊर्जा, इच्छाओं और नियमित रूप से व्यायाम में परिवर्तन
- ध्यान केंद्रित करने और निर्णय लेने में कठिनाई
- नींद संबंधी परेशानियां
- सिरदर्द, शरीर में दर्द, पेट की समस्या, इत्यादि जैसे शारीरिक लक्षण
- पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं का और अधिक बिगड़ना
- नशीले पदार्थों का अधिक सेवन करना

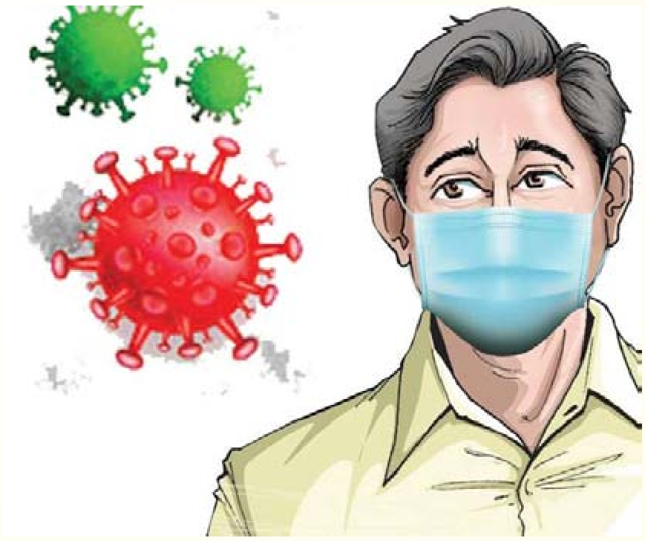

यह आपदा नहीं बल्कि एक अवसर है, अपनों से जुड़ने का। शारीरिक दर्द एक चिकित्सक दवाइयों से ठीक कर सकता है, किंतु मानसिक तनाव को एक दूसरे की मदद करके ही दूर किया जा सकता है। स्वस्थ तरीके से तनाव का सामना करने के लिए कुछ जरूरी बातें जो हमे पता तो होती है पर नजरअंदाज कर दी जाती है, उन पर अब हमें ध्यान देने का समय आ गया है।

- सोशल मीडिया पर नकारात्मक समाचारों को देखने, पढ़ने या सुनने से ब्रेक लें। अपने आपको आस–पास की घटनाओं से अवगत बनाए रखना अच्छी बात है, लेकिन लगातार महामारी के बारे में सोचते रहने से परेशान होने की संभावना भी बहुत बढ़ जाती हैं।
- हमें शारीरिक दूरी रखनी है, इसका यह मतलब नहीं है कि अपने दोस्तों और परिवार से ही दूर हो जाएं। इस समय इन सभी से जुड़े रहना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इन सब के साथ सोशल मीडिया के माध्यम से, या वीडियो चैट द्वारा जुड़ें। किसी को भी यह ना लगे कि वह अकेला है। अपने चारों तरफ एक सकारात्मक

माहौल बनाए रखें।

- योग विद्या हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई हमारी सबसे बड़ी धरोहर है। नियमित रूप से योग, व्यायाम एवं स्वस्थ संतुलित भोजन करें, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि हो।
- पर्याप्त नींद से भी आपके मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने में सहायता होगी। अत्यधिक शराब, तंबाकू, और नशीले पदार्थों के सेवन से बचें।
- यह तो सबने सुना है कि ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। बस अब हमें करना क्या है, मन को बोलो कि कोरोना एक बीमारी ही तो है, जीवन का अंत नहीं। और वैसे भी अब तो कोविड–19 वैक्सीन का टीका भी उपलब्ध है, आपकी बारी आते ही इसे जरूर लगवाएं। ऐसा करने से आप सिर्फ खुद को ही नहीं, बल्कि अपने करीबी लोगों को भी इस महामारी से बचने में सहायता करेंगे।
- बार–बार साफ सफ़ाई करने के लिए कहा जा रहा है, यह साफ सफाई हमें अपने विचारों की भी करनी है और अपनी इच्छा शक्ति को और भी मजबूत बनाना है। खुद को उत्साहित रखने के लिए अपनी रुचियों पर ध्यान दें। याद करें किस तरह बचपन में हमें स्कूल की पढ़ाई से ज्यादा मजा दूसरे कामों में आता था। कुछ नया कीजिए, कुछ पुराने काम को नए तरीके से कीजिए। बस ये याद रखें कि अपने आप को व्यस्त रखें, क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर और ऐसे में तनाव के अलावा कुछ नहीं होता। साथ ही उन भरोसेमंद लोगों के साथ बात करें जिन्हें आप अपनी चिंताओं और परेशानियों के बारे में खुलकर बता सकते है और वो भी परस्पर मदद के लिए हमेशा आपके पास हैं। याद रखें कि अगर आप परेशानी से ग्रस्त है तो भी सामने वाले की परेशानी सुनें, क्योंकि क्या पता वह आपसे भी ज्यादा जरूरतमंद हो।

कोरोना ने यह जरूर याद दिला दिया है कि हम सब सामाजिक प्राणी जरूर हैं, पर हर दिन की भाग–दौड़ में हम खुद को ही कहीं खो चुके है। हम भूल गए हैं कि अकेलेपन में पैसा शोहरत सब व्यर्थ है। अब से ये देखो कि आपने कितनो को हँसाया, कितनों की जिंदगी में दो पल खुशियों के लाए। हम इस महामारी से भी जीतेंगे और एक मजबूत पीढ़ी के रूप में आगे भी बढ़ेंगे। तो सभी मुस्कुराते रहो और मानसिक तनाव को बोलो '' ओ तनाव, कल आना !!!''

कोरोनावायरस
जानकारी ही बचाव है...

मीना कुमारी
नर्सिंग अधिकारी
क.रा.बी.नि. आदर्श अस्पताल, बद्दी

लातीनी (latin) भाषा में ''कोरोना'' का अर्थ ''मुकुट'' होता है और इस वायरस के कणों के इर्द–गिर्द उभरे हुए कांटे जैसे ढाँचों से इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी में मुकुट जैसा आकार दिखता है, जिस पर इसका नाम रखा गया है सूर्य ग्रहण के समय चंद्रमा सूर्य को ढ़क लेता है तो चंद्रमा के चारों ओर किरण निकलती प्रतीत होती है उसको भी कोरोना कहते हैं।

सार्स–कोव 2 (नोवल कोरोनावायरस)

यह वायरस भी जानवरों से आया है। ज्यादातर लोग जो चीन शहर के केंद्र में स्थित हुआनन सीफूड होलसेल मार्केट में खरीदारी के लिए आते हैं या फिर अक्सर काम करने वाले लोग जो जीवित या नव वध किए गए जानवरों को बेचते थे, वे इस वायरस से संक्रमित थे। चूंकि यह वुहान, चीन से शुरु हुआ, इसलिये इसे वुहान कोरोनावायरस के नाम से भी जाना जाता है। हालांकि डब्ल्यूएचओ ने इसका नाम सार्स–कोव 2 (SARS& CoV 2) रखा है। कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नही देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ है।

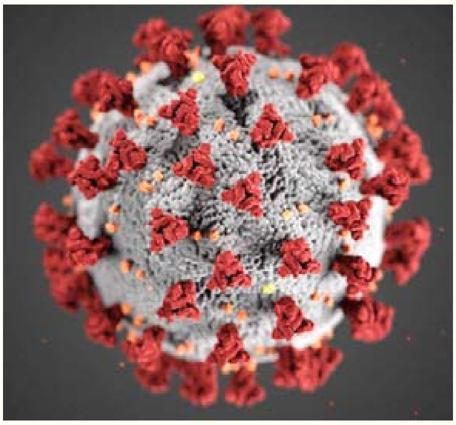

कोरोनावायरस के लक्षण

इसके लक्षण फ्लू से मिलते–जुलते हैं। संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। कुछ मामलों में कोरोना वायरस घातक भी हो सकता है। खास तौर पर अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा, डायबटीज और हार्ट की बीमारी है।

कोरोना की पहचान के लिए इन लक्षणों पर गौर करें

तेज बुखार आना: अगर किसी व्यक्ति को सुखी खांसी के साथ तेज बुखार है तो उसे एक बार जरूर जांच करानी चाहिए। यदि आपका तापमान 99.0 और 99.5 डिग्री फारेनहाइट है तो उसे बुखार नही मानेंगे।

अगर तापमान 100 डिग्री फारेनहाइट (37.7 डिग्री सेल्सियस) या इससे ऊपर पहुंचता है। तभी यह चिन्ता का विषय है।

कफ और सूखी खांसी: पाया गया है कि कोरोना वायरस से होता है मगर संक्रमित व्यक्ति को सूखी खांसी

आती है।

सांस लेने में समस्याः कोरोना वायरस से संक्रमित होने के 5 दिनों के अंदर व्यक्ति को सांस लेने में समस्या हो सकती है. सांस लेने की समस्या दरअसल फेफड़ों में फैलते कफ के कारण होती है।

फ्लू–कोल्ड जैसे लक्षणः विश्व स्वास्थ्य संगांठन (WHO) के अनुसार कोरोना वायरस से संक्रमित होने पर कभी–कभी बुखार, खांसी, सांस में दिक्कत के अलावा फ्लू और कोल्ड जैसे लक्षण भी हो सकते हैं।

डायरिया और उल्टीः कोरोना से संक्रमित लोगों में डायरिया और उल्टी के भी लक्षण देखे गए है। करीब 30 प्रतिशत लोगें में इस तरह के लक्षण पाए गए हैं।

सूंघने और स्वाद की क्षमता में कमीः बहुत से मामलों में पाया गया है कि कोरोना से संक्रमित लोगों को सूंघने और स्वाद की क्षमता में कमी आती है।

कोरोना वायरस से बचाव के तरीके

वर्तमान में कोरोनावायरस से बचने के लिए कोई दवाई मौजूद नहीं है। आप इससे बचने के लिए कुछ चीजें कर सकते हैं। अपने हाथों को ज्यादा साबुन और पानी के साथ कम से कम 20 सेकेंड तक धोएँ। बिना धुले हुए हाथों से अपनी आँखों, नाक या मुंह को न छूएं जो लोग बीमार हैं, उनके ज्यादा नजदीक न जाएँ।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक, हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छीकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिशू पेपर से ढ़ककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों उनसे दूरी बनाकर रखें। जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

सेल्फ आइसोलेशन में क्या करें, क्या न करें

- घर पर रहें और यहां भी निश्चित दूरी बनाकर रखें।
- ऑफिस, स्कूल या किसी सार्वजनिक स्थान पर न जाएं।
- बहुत अधिक जरूरत न हो तो यात्रा न करें।
- घर पर लोगों को आने से मना करें, कोई आता है तो उन्हें समझाएं। मिलने से बचें।
- डॉक्टर जब तक बाहर निकलने को नहीं कहते तब तक बाहर न निकलें।

सेल्फ आइसोलेशन की ज्यादा जरूरत किसको

- किसी सांदिग्ध के संपर्क में आए हैं तो खुद को दूसरों से अलग रखें।
- वायरस के लक्षण हैं तो कम से कम 14 दिन तक अलग रहें।
- लक्षण वाले व्यक्ति के साथ रहते हैं तो भी 14 दिन आइसोलेट रहें।
- कोरोना के मामले में व्यक्ति में लक्षण 14 दिन के भीतर दिखते हैं।

इन बातों का भी रखें ध्यान

- जितना संभव हो मास्क पहने रहें
- कमरे में बाहर की हवा आए, खिड़की हो।
- शौचालय भी अलग हो, दूसरे प्रयोग न करें।
- किचन में न जाएं और किसी भी बर्तन को न छुएं।
- हाथ धोने और साफ–साफई का पूरा ध्यान रखें।
- बुजुर्गों के लिए अलग कमरा हो।
- शौचालय एक है तो सावधानी से साथ करें
- खाना अपने कमरे में खाएं।

छोड़ो कोरोना का रोना

सूरज भान
सहायक

चीन से चला कोरोना जिसके कारण दुनियां को पड़ रहा है रोना
देश दर देश फैल गया है इससे अछूता नहीं दुनिया का कोई कोना

खांसी और जुकाम के कारण मनुष्य को जान से पड़ता है हाथ धोना
कोरोना को हराने के लिए मनुष्य जाति को जागरुक पड़ेगा होना

दुश्मन है मनुष्य जाति का फिर भी तुम इससे डरो ना
कोरोना को मिटाने की दवा नहीं है कोई, इसलिए दूर–दूर रहो ना

भारत ने दवा भी है बनवाई, दूरी बनाए रखना ही है कोरोना की एकमात्र दवाई
अर्थव्यवस्था खतरे में है खतरे में है सब बहन और भाई

जितनी जल्दी सुधरेंगे उतनी जल्दी उबरेंगे
दुनिया को बचाना है कोरोना को हराना है
भारत को विश्व गुरु बनाना है

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
आदर्श अस्पताल, बद्दी के पन्ने से

डॉ. आर. पी. मीणा, चिकित्सा अधीक्षक आदर्श अस्पताल बद्दी, श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री संतोष कुमार गैंगवार से कोविड–19 के दौरान उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रशंसा पत्र प्राप्त करते हुए

डॉ. आर. पी. मीणा, चिकित्सा अधीक्षक आदर्श अस्पताल बद्दी, हिमाचल प्रदेश सरकार से कोविड–19 के दौरान उत्कृष्ट सेवा के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए

सृजन ही मनुष्य को जीवंत बनाता है

हरपाल सैनी
सहायक निदेशक

"पहाड़ों को काटकर, उनके सीने पर बिछाई गई सर्पाकार रेल पटरी पर रेलगाड़ी द्रुतगति से छुक छुक करती अठखेलियां सी करती जा रही है। दूर क्षितिज में ढ़लता सूरज मानो प्रण कर रहा है कि सारे आकाश में सुनहरी लालिमा बिखेर कर ही दम लेगा। कभी–कभी ट्रेन की लंबी सीटी मानो प्रकृति को अपने सर्वश्रेष्ठ होने का संदेश देने की चेष्टा करती प्रतीत होती है।"

ये पंक्तियां पढ़ते ही हमारे जहन में पूर्व के महान उपन्यासकार श्री गुलशन कुमार नंदा और श्री वेद प्रकाश शर्मा जी का सहर्ष ही समरण हो जाता है। उपन्यास के हर पन्ने पर लिखी प्रत्येक पंक्ति इतनी जीवंत कि पढ़ने वाला उसमें पूर्णतया डूब जाता और जो रूचि शुरू में बनता है वह अंत तक कायम रहता। ये लोग कला के सृजन के शीर्ष पर थे। क्या कभी उपन्यास पढ़ते, टीवी या फिल्म देखते हमारे मन में भी एक बार यह विचार नहीं उपजा, की हम भी कभी कुछ रचनात्मक सृजन करें। अगर हां तो यह लेख आपके लिए है और यदि नहीं तो यह लेख आपके लिए नितांत ही आवश्यक है।

मन रूपी पंछी के पंख पसार कर, इस ब्रह्मामंड में विचरण करते हुए तमाम सचेत एवं सुप्त ख्यालों और विचारों को संग्रहित करते हुए, सहेज कर आकर्षक रचना के रूप में मूर्त रूप देना ही कला है, जो विद्या की अधिष्ठात्री माता सरस्वती के आशीर्वाद से ही हमें प्राप्त होती है।

विचारों की यह संरचना हर कला में अनिवार्य रूप से विद्यमान होती है कभी गद्य के रूप में, तो कभी पद्य के रूप में आधुनिक युग में चाहे सिनेमा की कसी ताजी पटकथा हो या ओटीटी प्लेटफार्म जैसे नेटफ्लिक्स, हॉटस्टार, प्राइम टीवी इत्यादि की कोई मशहूर वेब सीरीज हो। कुशल लेखन अपनी छाप दर्शकों के दिलों दिमाग पर छोड़ ही जाता है। और किसी भी कंटेंट की सफलता या असफलता की कुंजी पटकथा लेखक के हाथ में ही रहती है।

आज के मशीनी युग में रोजमर्रा की जिंदगी एक भागम–भाग व्यवस्था का ही हिस्सा है जिससे चाह कर भी आधुनिक मानव इस प्रक्रिया से अलग नहीं हो सकता। परिवारों का विकेंद्रीकरण हुआ है और एकल परिवार का कंसेप्ट फल–फूल रहा है। परिणाम यह है कि गृहस्थ

मूर्ख के लिए क्रोध जोर शोर से प्रकट करने वाली वस्तु है जबकि बुद्विमान के लिए शांति से वश में करने की।

जीवन की कमान भी पति–पत्नी को संयुक्त रुप से खुद ही संभालनी पड़ रही है। यह और भी जटिल हो जाता है अगर दंपत्ति में दोनों कामकाजी हो या फिर परिवार में नव आगंतुक का आगमन भी हुआ हो। इन सब परिस्थितियों के साथ आज की सरकार की दूरदर्शी और प्रोएक्टिव अप्रोच के कारण सभी प्रकार के कार्य स्थलों जैसे सरकारी या प्राइवेट बहुत डिमांडिंग हो गए हैं। तब और भी ज्यादा अगर सिटीजन चार्टर की तलवार सिर पर लटकती हो। इन सब में सामंजस्य रखना बेहद मुश्किल हो जाता है। और हम अपनी कलात्मक सृजनता को बिल्कुल भूल जाते हैं। तनाव हमारे ऑफिस और गृहस्थ जीवन में धीरे धीरे पैर पसार लेता है और घर कर लेता है। आज के मोबाइल युग ने जहां विषयों को नोट कर या याद कर रखने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है वहीं पर वृहद रूप से हमारी रचनात्मक सृजन शक्तियों को भी क्षीण कर दिया है।

तनाव प्रबंधन का एक खास पहलू यह भी है कि अपनी अधूरी इच्छाओं और रुचियां को अपने खाली फुर्सत के क्षणों में जहां तक हो सके फॉलो किया जाए फिर वह चाहे रचना लेखन हो पेंटिंग हो गायन हो या किसी भी तरह की हो।

वर्तमान में पत्रिका हिम ज्योति का मूलभूत उद्देश्य भी यही है कि अपने कार्मिकों व उनके परिवार के सदस्यों को एक ऐसा मंच प्रदान करने की चेष्टा है जहां वह स्वतंत्र और निर्बाध रूप से अपनी अभिव्यक्ति को रचना के रूप में दर्ज करवा सके। यकीन मानिए इससे केवल साहित्य सृजन अमीर होगा बल्कि रचनाकार को भी एक असीम संतुष्टि की अनुभूति होगी और दूसरों को केवल उनके प्रतिभा का प्रमाण मिलता है बल्कि वह औरों को सृजन के लिए प्रेरणा शक्ति का काम भी करते हैं।

किसी भी परिवर्तन के लिए जरूरी नहीं कि बहुत बड़े स्तर पर प्रयास किया जाए बल्कि थोड़े–थोड़े से शुरुआत की जा सकती है। विश्वास कीजिए आपकी यह छोटी सी कोशिश आपको आपके व्यक्तित्व को निखार कर आपको केवल एक अच्छा कार्मिक ही बनाएगी अपितु एक अच्छा नागरिक एक अच्छा परिवार सदस्य और एक अच्छा समाज का निर्माण करने में भी आपकी मदद करेगी।

सृजन का संकल्प भी एक विचार है जो एक कार्य नहीं अपितु एक प्रक्रिया है। हम सब यह प्रण ले कि जिस भी रूप में सही हम कुछ ना कुछ सृजनता को अपनाएंगे और किसी न किसी रूप में अपना योगदान अवश्य देंगे।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 3

राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि–

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।
2. **केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से–**

   क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा: परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे।
3. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

जिंदा दिल जिंदगी

नवजोत शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

वक्त को वक्त से मिल रहे हो
तो जिंदा हो
वक्त के साथ चलते जा रहे हो,
तो जिंदा हो

हर शमा से शमा जला रहे हो, तो जिंदा हो
जो बीत गया वो कल था
हर आज को भुना रहे हो, तो जिंदा हो
वक्त देता है जख्म तो क्या
वक्त कभी ना कभी
जख्म भर भी देगा
इस आस से चलते जा रहे हो
तो जिंदा हो

नहीं आसान, ये वक्त का ताना बाना
जो समझ गया वो बन गया
जो न समझा वो उलझ गया
इस उलझन को सुलझा रहे हो तो जिंदा हो
कभी हम न थे
तो कभी तुम न थे
इस कसक को भूलते जा रहे हो तो जिंदा हो

अरसा ही गुजर गया
खुद को समझते समझते
अब बीते वक्त के जख्म
दर्द दिए जा रहे हैं
इस दर्द को खुशी खुशी
पीए जा रहे हो तो जिंदा हो

कुछ पाने की तलाश थी
शायद मंजिल भी पास थी
रास्तों पर चलना ना आया
वो वक्त गुजर गया तो क्या
अब चलते जा रहे हो तो जिंदा हो।

गरीबी और प्रवासियों की व्यथा

दुखमोचन गोपाल
अधीक्षक

मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप निसंदेह गरीबी है जिसकी वजह से अन्य समस्याओं की शुरूआत होती है। जिस किसी को भी अपने जीवन यापन के लिए अपनी जन्म धरती छोड़कर रोजगार के लिए अन्यत्र जाना पड़े और हर पल संघर्ष की अंतहीन पहलुओं से जूझते हुए बमुश्किल दो वक्त की रोटी नसीब हो ऐसे लाखों करोड़ों लोग आखिर किस तरह अपना रहन–सहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को बेहतर बना सकें यह विचार का विषय है। हम आए दिन अपने आस पास ऐसी स्थिति से वाकिफ होते है।

आजादी के 73 वर्षों के बाद भी अमीरी और गरीबी के बीच अंतर बढ़ता गया और यह निरंतर देश के नीति निर्माताओं को इससे निपटने में कठिन चुनौती देता आया है।

अशिक्षा, कुपोषण, बेरोजगारी, रोग, उपचार में कमी आदि जैसी समस्याओं की जड़ में सिर्फ और सिर्फ गरीबी है। यूं तो हर कोई जीवन पर्यंत संघर्षरत रहकर जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए दिन रात एक कर देता है परंतु गरीबी का दंश झेलता शख्स तो पीढ़ी दर पीढ़ी ठोकर खाता और तकलीफों के झंझावातों में उलझता जाता है। शिक्षा और स्वास्थ्य निश्चय ही कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए सबसे बड़ा हथियार है। इन दोनों आधारभूत व्यवस्था में सुधार के लिए एक भागीरथ प्रयास की जरूरत है ताकि जन सेवा मूल भाव बना रहे।

पिछले एक साल से पूरा विश्व कोविड–19 नामक महामारी की चपेट में है और तमाम संभव उपायों को अपनाने के बावजूद इसे नियंत्रण करने में विफल रहा जिसके हम सब साक्षी हुए। समाज के जिस खास वर्ग पर इस महामारी की ज्यादा चोट पड़ी उसमें पहला नाम श्रमिक, मजदूरों और प्रवासियों का आता है जिसका हर दिन गरीबी से अभिशप्त है। शायद ही किसी ने अनुमान किया होगा कि अपनी जन्म धरती को छोड़कर रोजी रोटी कमाने परदेश गए और इस महामारी ने आखिरी उम्मीद भी तोड़ दी। भूख से बिलबिलाते बच्चों के साथ तपती धूप में लाखों परिवार हजारों किलोमीटर दूर पैदल अपने घर इस आस में चल दिया कि जिंदगी तो इम्तिहान ले रही है, अपना गाँव समाज जरूर अपनाएगा। लेकिन उनका हौसला तब टूट गया जब अपने सामाजिक वंचना के कारण दरकिनार होने लगे। इससे दूर रहो, यह तो सबको बीमारी फैलाएगा इससे दूर रहो। जैसे अपमान को पी लिया तो बांकी कसर बाढ़ और

महंगाई ने पूरी कर दिया। गरीबों के पसीने के बदौलत जो समाज या देश विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता है उसे भी समान पूर्वक जीने का हक है। सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करते हुए शिक्षा और स्वास्थ्य को सबको मुहैया करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। हर समस्या का समाधान है और जब तक इसके जड़ पर चोट न हो, हालात ज्यों के त्यों बने रहेंगे। परिवर्तन संसार का नियम है और जो बदलाव को स्वीकार न करे वो पीछे छूट जाता है। तकनीकी के इस दौर में रोजगार सृजन के अवसर तलाशने होंगे। शिक्षा का उद्देश्य नवाचार आधारित जन कल्याण होने चाहिए। चिकित्सा को भी जन सेवा मूलक होना पड़ेगा। नीति निर्माण और इसके प्रभावी क्रियान्वियन से इस सफल बनाया जा सकता है। इसलिए शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सर्जीकल स्ट्राइक की जरूरत है ताकि यह सर्वसुलभ हो सके। ग्रामीण भारत में देश की आत्मा बसती है। विकास की धार गाँव से शुरू होकर शहरों तक पहुँचे तभी सुदृढ़ समाज का निर्माण हो सकेगा। गाँव में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं और आत्मनिर्भरता का मूलमंत्र अपनाकर सही दिशा में आगे बढ़ाना ठान लिया जाए तो हर हाथ को काम, हर भूखे को रोटी, हर बच्चे को शिक्षा और हर बीमार को इलाज मिलना मुमकिन है।

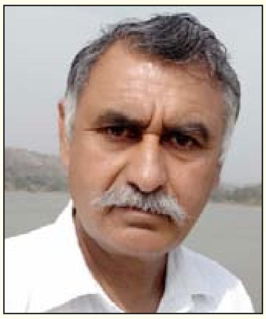

बृज मोहन
अधीक्षक

खुश हूँ

जिन्दगी छोटी है, हर पल में खुश हूँ।
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।

आज पनीर नहीं, दाल में खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ।

दोस्तों का साथ नहीं, अकेला ही खुश हूँ।
कोई नाराज है, उसके अन्दाज से खुश हूँ।

जिसको देख नहीं सकता, आवाज से ही खुश हूँ।
जिसको पा नहीं सकता, उसको सोच कर ही खुश हूँ।

बीता हुआ कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ।
आने वाले पल का पता नहीं, इन्तजार में ही खुश हूँ।

हँसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ।
अगर दिल को छुआ तो जवाब देना,
वरना बिना जवाब के ही खुश हूँ।

प्रेम एक ऐसा अनुभव है जो मनुष्य को कभी हारने नहीं देता और घृणा एक ऐसा अनुभव है जो इंसान को कभी जीतने नहीं देता।

आयुषी ठाकुर
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

प्रश्न. आप जीवन में सबसे अच्छी सलाह क्या देना चाहोगे ?

उत्तरः

1.) अगर आप किशोर हैं तो अपनी शिक्षा पर ध्यान दें। सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करना केवल आपके कैरियर को बर्बाद करेगा।

2.) हमेशा हँसमुख सकारात्मक लोगों के साथ रहे।

3.) अपने कम्फर्ट जोन से बाहर आएँ। यहीं से जीवन की शुरुआत होती है।

4.) किसी के अधीन मत रहिए। अपनी कोशिशों से अपने भविष्य पर नियंत्रण रखें।

5.) अपने आप को परिस्थितियों का गुलाम कभी मत समझो। हम अपनी कोशिशों के खुद उत्तरदायी हैं।

6.) नकारात्मकता से अपने आप को दूर रखिए।

7.) उन चीजों को भी करने के लिए वक्त निकालें जो आपको बेहद पसंद है।

8.) आपके माता–पिता और सच्चे दोस्त सबसे ज्यादा अनमोल हैं।

9.) स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण चीज है।

10.) आप अपनी जिंदगी मे जिस राह का भी चुनाव करते हैं वह आपके जीवन को परिभाषित करता है। आपका जीवन उन चुनावों पर निर्भर करता है।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 12

अनुपालन का उत्तरदायित्व–

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह––

i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है।

ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करें।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करें।

ध्यान से शारीरिक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक लाभ

अंजना राणा
अधीक्षक

ध्यान का अर्थ है क्रियाहीन होना। ध्यान क्रिया नहीं, अवस्था है। ध्यान की अवस्था में मन विषयों से विमुख होकर अपने आंतरिक केंद्र से जुड़ता है। मन में उठने वाले अनेक विचार धीरे–धीरे शांत होते चले जाते हैं। जब चंचल मन शांत हो जाए, मन में कोई विचार कोई ख्याल न रहे लेकिन जागरूकता बनी रहे वही ध्यान है। ध्यान में चेतना धीरे –धीरे अपने आनंदमय स्वरूप में स्थापित होती जाती है। एक अलौकिक आनंद और प्रेम की अनुभूति होने लगती है। ध्यान की गहराई के चित्त का शांत, मन का विचारों से मुक्त होना अनिवार्य है। शांत मन में ही परमात्मा उतरते हैं। मन को शांत, स्थिर और प्रसन्न रखना ही एक योगी का पहला कर्तव्य है। मन को निर्विषय करना ही ध्यान है।

शांत और स्थिर मन का ही ध्यान में प्रवेश हो सकता है। जो ध्यानी हो जाता वह उस परम के सौंदर्य में डूब जाता है। उसका हर क्षण मस्ती से भरा होता है। इस संसार में हमारी उन्नति और पतन का कारण कोई और नहीं अपने विचार हैं। सात्विक और शुभ संकल्पों से परिपूर्ण विचार व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाते हैं।

साधक सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख, लाभ हानि, मान–सम्मान, ऊंच–नीच को समान भाव से ग्रहण करता है और अपने को सब प्रकार से जीत लेता है। जो हर परिस्थिति में समान रहते हैं, समान आचरण करते हैं, वे लोग साधना में शीघ्र प्रगति करते हैं।

ध्यानी व्यक्ति के जीवन का आधार सहजता होती है। एक छोटा बच्चा सहज होकर कार्य करता है, उसके कार्यों में कोई बनावट, कोई दिखावा नहीं होता, इसलिए उसकी हर छोटी बात भी प्यारी लगती है, उसका हर कृत्य आनंद से परिपूर्ण होता है उसी प्रकार ध्यान में व्यक्ति जितना सहज और सरल होगा वह उतना ही प्रसन्न और आनंदित होगा।

जब ध्यान की किरणें मनुष्य के जीवन पर पड़ती है तो जीवन में होश आने लगता है। व्यक्ति अपना हर कार्य सजगता से करता है। ध्यान–योग मन को विषयों से हटाकर परम चेतना की ओर मोड़ता है और तब वासना के जाल का एक–एक फंदा टूटने लगता है।

ध्यान के शारीरिक लाभ

- ध्यान करने से रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है।
- मांसपेशियों में जकड़न कम होती है।
- ध्यान सिर दर्द एवं माइग्रेन में आराम दिलाता है।

- ध्यान शरीर को हानिकारक पदार्थों से बचाता है।
- ध्यान से चेहरे पर ओज और तेज आता है।

मनोवैज्ञानिक लाभ

- ध्यान आत्म–विश्वास और सहनशीलता को बढ़ाता है।
- ध्यान से सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।
- ध्यान एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाता है।
- ध्यान अशांत एवं चंचल विचारों को शांत करता है।
- ध्यान भावनात्मक स्थिरता को बढ़ाता है।

आध्यात्मिक लाभ

- ध्यान से ज्ञान में वृद्धि होती है।
- नई सोच का उदय ध्यान के द्वारा होता है।
- ध्यान हमारे जीवन को व्यवस्थित करता है।
- ध्यान हमें अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है।
- ध्यान से शरीर, मन और आत्मा में संतुलन आता है।

ध्यान के नियम

- आप जो भी कार्य करते हैं, वह पूरे मनोयोग से करें। अपनी समस्त उर्जा को कार्य के पूर्ण करने में लगा दें।
- ब्रह्ममुहूर्त में किया गया ध्यान ज्यादा लाभदायी होता है।
  शांत, शुद्ध वातावरण में ध्यान करने से मन में शांति आती है।

प्रिय पतिदेव

आशा मेहता
सहायक

क्या मैं आपसे कहती हूँ कि चाँद तारे लाओ?
क्या मैं आपसे कहती हूँ कि मुझे सबसे ज्यादा चाहो?
क्या मैं आपसे कहती हूँ कि बाहर खिलाने ले चलो?
क्या में आपसे कहती हूँ कि मेरे काम में हाथ बटाओ?
नहीं मैं इनमें से न कुछ कहती हूँ मैं न चाहती हूँ
बस केवल इतना चाहती हूँ की आप जब आओ
तो एक बार मुझे देखकर मुस्कुरा दो तो काफी है,
एक पहर साथ बैठ कर खाना खाओ वो काफी है।
एक बार फुर्सत से थक कर साथ बैठ जाया करो तो काफी है,
एक बार किसी दिन जरा "सुनो" ही कह दो तो काफी है।
यूं ही गुजर जाएगी ये जिंदगी गिले–शिकवे में
बस एक दूसरे की परवाह कर लो तो काफी है।
आपकी मुस्कुराहट ही जिंदगी है हमारी बस,
वही दे दिया करो रोज तो काफी है।

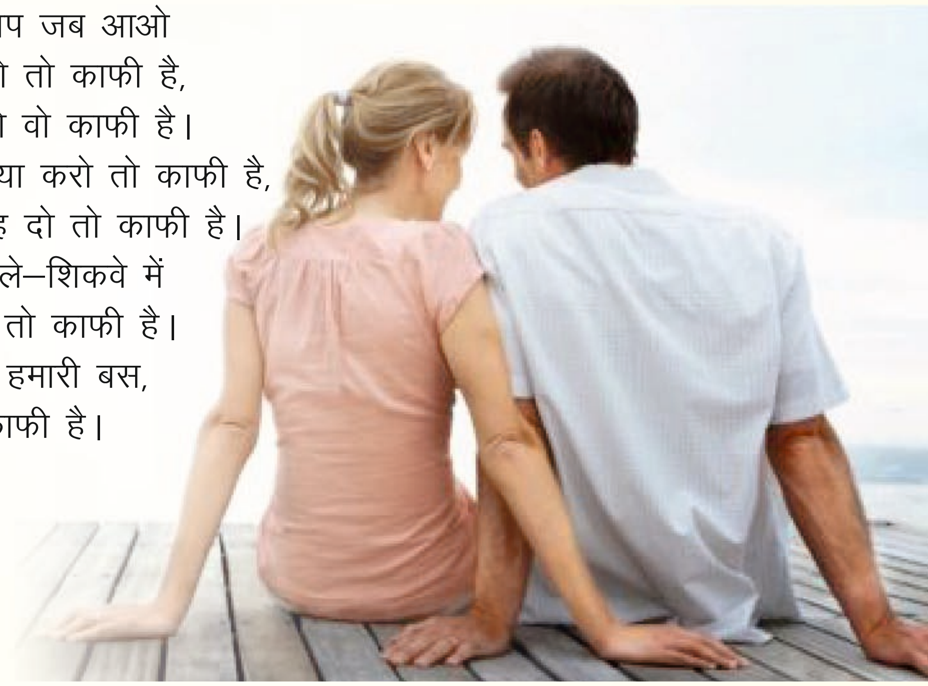

राजभाषा नियम 1976 का नियम 11

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि–

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

   परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

अंजना राणा
अधीक्षक

विदाई गीत

लो छोड़ चले ई.एस.आई.सी हम, अरसे से साथ थे
मिलेंगे कहां, कब कैसे कोई जाने न
लो छोड़ चले ई.एस.आई.सी हम

अपना अनमोल समय दे, सेवा की आई.पी. की
अपना अनमोल समय दे सेवा की आई.पी. की
सच्चाई और मेहनत से पूंजी निवेश की
सच्चाई और मेहनत से, पूंजी निवेश की
ओ साथी रे... सच्चाई और मेहनत से पूंजी निवेश की
कुछ भी बुरा करने को दिल ये माने ना
लो छोड़ चले ई.एस.आई.सी हम

ई.एस.आई.सी. वाले हम थे, हमसे था ई.एस.आई.सी
ई.एस.आई.सी. वाले हम थे, हमसे था ई.एस.आई.सी
हमने दी सर्विस इसको इसने रोजी रोटी
हमने दी सर्विस इसको इसने रोजी रोटी
ओ साथी रे ... हमने दी सर्विस इसको, इसने रोजी रोटी
जाने किस हाल में होते, जो यहां आते न।
लो छोड़ चले ई.एस.आई.सी हम

मेरी इंग्लैंड यात्रा

प्रदीप शर्मा
सहायक

मेरी वायुसेना की सेवा के दौरान तीन माह के लिए मुझे इंग्लैंड जाने का अवसर प्राप्त हुआ। आज इस पत्रिका के माध्यम से मैं अपनी उस तीन माह के अविस्मरणीय अनुभवों को साझा कर रहा हूं। मार्च, 2007 में मेरी तैनाती कानपुर में थी। एक दिन मुझे खबर मिली कि मेरा चयन उस दल में हो गया है जिसे इंग्लैंड से उस समय खरीदे गए एक विमान के प्रशिक्षण हेतु इंग्लैंड जाना है। यह प्रशिक्षण तीन माह का था। हमारी फ्लाइट 17 अगस्त, 2007 को सुबह 7 बजे इंदिरा गांधी अतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा से थी। बोर्डिंग पास लेते वक्त हमें बताया गया कि हमारी एकॉनोमी क्लास की सीट अपग्रेड होकर एक्सीक्यूटिव श्रेणी में हो गयी है। अतः हमारा 9 घंटे का सफर बहुत अविस्मरणीय रहा।

हमारी उड़ान इंगलैंड के स्थानीय समय लगभग 01:30 बजे लंदन के हिथ्रो हवाई अड्डे पर उतरी। जिस विमान कंपनी में हमें प्रशिक्षण लेना था उसके कर्मचारी हमें वहां लेने आए थे। हवाई अड्डे से निकलते ही हमें एक व्यक्ति ने आवाज लगाई "भारतीय वायु सेना" हमने उसकी तरफ देखा तो उसने हमें अभिवादन के उपरांत बताया कि वह हमें लेने आया है। कुछ समय तक हम आश्चर्यचकित थे कि बहुत सारे भारतीय मूल के लोग बाहर निकल रहे थे इतनी भीड़ में उसने हमें कैसे पहचान लिया। हमें बताया गया कि हमें वहां से लगभग 600 मील दूर इंग्लैंड के छोटे से नगर प्रेस्टेन जाना है। हम आगे की सफर के लिए 12 सीटों वाली बस में सवार हुए। रास्ते में नए देश के छोटे–छोटे कस्बे व गांव व उनके एक जैसे लाल छतों वाले घर बहुत सुंदर लग रहे थे। हमारी गाड़ी किसी भी गांव या शहर से न जाते हुए गांव के ऊपर बने फ्लाईओवर या बाहर से गुजर रही थी।

लगभग 3 घंटे के सफर के बाद हमारी बस एक रेस्तरां पर रूकी जहां केवल रेस्तरां, पेट्रोल पंप तथा बहुत बड़ी पार्किंग थी। हाइवे पर जाने वाली लगभग सभी गाड़ियां वहीं रूक रही थी। गाड़ी के ड्राइवर द्वारा पेट्रोल खुद भरा जा रहा था तथा कार्ड द्वारा भुगतान किया जा रहा था। आगे 3 घंटे का सफर अभी और था। एक नया अनुभव जो हमें इस यात्रा में हुआ वह आपके साथ साझा करना चाहूंगा। जब बस लगभग हमारे गंतव्य तक पहुंचने ही वाली थी तो बस के स्पीकर से एक उद्घोषना होना शुरू हो गई कि जिसका हिंदी में अर्थ था कि "आपने अपनी ड्राइविंग का निर्धारित समय पूरा कर लिया है।" जो लगातार हो रही थी। हमने पूछा कि यह आवाज कैसी तो हमें बताया गया कि यह ड्राइवर के इस गाड़ी में 8 घंटे का समय पूरा हो गया है अतः इसे ड्राइविंग बंद करने की चेतावनी है। अतः गाड़ी को किनारे में रोककर दूसरे व्यक्ति गाड़ी में अपनी जेब से निकालकर एक सी.डी. गाड़ी में डाली तब वह चेतावनी बंद हुई तथा गाड़ी को आगे उसी ड्राईवर ने चलाई।

हम लगभग शाम के आठ बजे के करीब प्रेस्टन पहुंचे। होटल में वहां पर पहले से हमारे उपस्थित साथी हमारा बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। हमारे कमरे के नाम का कार्ड हमें सौंपा गया। वह हमें प्रशिक्षण तथा वहां क्या–क्या नहीं करना है सब अपने–अपने अंदाज में बता रहे थे। हमारा प्रशिक्षण अगली सुबह आरंभ होना था। हमें प्रशिक्षण देने वाली कंपनी ने हमारे रहने का इंतजाम बहुत अच्छा किया था। प्रत्येक व्यक्ति को होटल में अलग–अलग कमरा दिया गया था जो सभी सुविधाओं से सुसज्जित था। अपने कमरे में जाने के पश्चात मैंने देखा कि कमरे में चाय, काफी स्वयं बनाने की पूरी सुविधा व सामान था परंतु पीने का पानी नहीं था। अतः पानी के बारे अपने साथियों से पूछने पर हमें बताया गया कि यहां आप किसी भी नल से पी सकते हैं सभी नलों में स्वच्छ पीने वाला पानी ही आता है। वास्तव में वाश बेसिन का पानी बहुत स्वच्छ व साफ था। अगले दिन से हमारा प्रशिक्षण प्रारंभ था। सुबह पूरे आठ बजे कंपनी की बस हमें लेने होटल पहुंच गयी थी। विमान निर्माण कंपनी का कार्यस्थल शहर से बाहर लगभग 20 मील की दूरी पर था जहां पहुंचने में हमें 35 से 40 मिनट का समय लगा था। विमान निर्माण कंपनी एक बहुत बड़े भू भाग में स्थित थी तथा अधिकतम कार्यालय एक मंजिल इमारतें ही थी। सभी कार्यालय की ईमारत के प्रवेश द्वार बाहर लगी मशीनों में कार्ड डालने पर ही खुलते थे कोई भी संदिग्ध व्यक्ति अंदर प्रवेश नहीं कर सकता था। मेरा इंग्लैंड भ्रमण एक बहुत ही रोमांचक अनुभव था। वह देश प्रगति के मामले में भले ही भारत देश से काफी आगे था परंतु जो सांस्कृतिक विरासत भारत के पास है उसका कोई मेल नहीं है। यदि मैं उक्त यात्रा का पूरा वर्णन लिखकर बताऊँगा व मेरे अन्य अनुभव जो मझे उस यात्रा में हुआ है तो बात बहुत लंबी हो जाएगी। वायुसेना में कार्य करने से मुझे मिले इस अवसर के लिए मैं सदैव अपने आपको भाग्यशाली समझता हूं। और मुझे आज भी यह एक सपने जैसा लगता है।

यात्रा वृतांत

घुमक्कडी किस्मत से मिलती है

पाताल भुवनेश्वर गुफा का विवरण

कमलेश इगराल
फर्माशिष्ट

पाताल भुवनेश्वर चूना पत्थर की एक प्राकृतिक गुफा है, जो उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में गंगोलीहाट नगर से 14 किमी दूरी पर स्थित है। यह गुफा देवदार के घने जंगलों के बीच अनेक भूमिगत गुफाओं का संग्रह है। जिसमें से एक बड़ी गुफा के अंदर शंकर जी का मंदिर स्थापित है। इस गुफा में धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई प्राकृतिक कलाकृतियां स्थित हैं। इस गुफा के बारे में स्कंद पुराण के मानस खन्ड के 103 वे अध्याय में बताया गया है। यह गुफा भूमि से 60 फीट नीचे है, तथा लगभग 160 वर्ग मीटर क्षेत्र में विस्तृत है। गुफा के अन्दर चूने के पत्थरों का काफी प्रभाव है। चूने के टपकने के कारण भिन्न प्रकार की आकृतियाँ बन गयी है

इस गुफा की खोज राजा ऋतुपर्णा ने की थी, जो सूर्य वंश के राजा थे और त्रेता युग में अयोध्या पर शासन करते थे। स्कंदपुराण में वर्णन है कि स्वयं महादेव शिव पाताल भुवनेश्वर में विराजमान रहते हैं और अन्य देवी देवता उनकी स्तुति करने यहां आते हैं। द्वापर युग में पाण्डवों ने यहां चौपड़ खेला और कलयुग में जगदगुरु आदि शंकराचार्य का 822 ई के आसपास इस गुफा से साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने यहां तांबे का एक शिवलिंग स्थापित किया। गुफा के अंदर जाने के लिए लोहे की जंजीरों का सहारा लेना पड़ता है यह गुफा पत्थरों से बनी हुई है इसकी दीवारों से पानी रिस्ता रहता है जिसके कारण यहां के जाने का रास्ता बेहद चिकना है। गुफा में शेष नाग के आकार का पत्थर है उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने पृथ्वी को पकड़ रखा है।

इस गुफा की सबसे खास बात तो यह है कि यहां एक शिवलिंग है जो लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में शिवलिंग की ऊंचाई 1.50 मी. है और शिवलिंग को छूने की लंबाई तीन मी है यहां शिवलिंग को लेकर यह मान्यता है कि जब यह शिवलिंग गुफा की छत को छू लेगा, तब दुनियां खत्म हो जाएगी।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 5

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर——

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

गजल

फिरोज अहमद
सहायक

देख लेना मैं हद से गुजर जाऊंगा
तू न मुझ को मिली तो मैं मर जाऊंगा
हो मुबारक ये शादी का जोड़ा तुझे
मुझ से मत पूछ अब मैं किधर जाऊंगा
मेरी यादें रुलाया करेंगी तुझे
तू समझती है दिल से उतर जाऊंगा
शौक से तुम मेरा इम्तेहान लो सनम
मैं हर एक इम्तेहान से गुजर जाऊंगा
ये न सोचा था मैंने कभी ए फिरोज
उसके दिल से मैं अक्सर उतर जाऊंगा

सोचता हूँ तुझे सोचना छोड़ दूँ
तेरी तस्वीर को देखना छोड़ दूँ
अब तुझे याद करने से क्या फायदा
इस तरह रात भर जागना छोड़ दूँ
तेरी किस्मत में शायद नहीं वो फिरोज
प्यार से क्यों मगर देखना छोड़ दूँ

सुखी लोगों के पास जीवन में सबकुछ नहीं होता है परंतु वे ऐसा वातावरण तैयार करते हैं जो उन्हें प्रसन्न रखता है।

शायरी

ऋषि
अधीक्षक

अगस्त का वो मौसम था
वो छत पर घूमा करती थी
देखने को एक झलक उसकी
मैं अपनी छत पे जाया करता था

जिस डोर के सहारे मैं
पतंग उड़ाया करता था
चूम कर वो जो उसको निकले
यूं पतंग घुमाया करता था

अगस्त का ही मौसम है
राह में फिर से उसके दीदार में बैठा हूँ
दिखती नहीं वो दूर तक
छत पर मैं फिर से पतंग लिये बैठा हूँ

टूटा हुआ इंसान ही
बारंबार चेहरा साफ करता है
छुपा लेता है दर्द को कहीं
और मुस्कुरा कर इजहार करता है

मेरे अल्फ़ाजों को तू मेरा एहसास समझना
मेरी नज्म में छुपे रहस्य को मेरा अंदाज समझना

स्याही की चमक को तू मेरा प्यार समझना
अन कही बातों को तू मेरी बात समझना

सफेद पन्नों पर उतारे है जो तेरे कसीदे
उसे मेरी जिंदगी की किताब समझना

ये जो आज फलक पर महताब निकल आया है
मेरा महबूब सड़क पर खुलेआम निकल आया है
ये दिवानों का शहर है नजर बचा के चलना
तेरे एक दीदार को मुक्कमल शहर निकल आया है

मेरी आवाज तुझ तक पहुँचेगी किस तरह
खुद में ही कैद कर रखा है मैनें खुद को

मेरी धड़कनों को तू महसूस कर सके तो
सफीर बनकर कुछ कह रही है फ़िजा तुझको

कसक है जो दिल की
वो एक रूप ले रही है
बेपनाह हो गई है जिंदगी
मजे खूब ले रही है

संघर्ष क्या है। एक औरत है।।
सुन्दर क्या है। एक औरत है।।
जहाँ कुछ नहीं। वहाँ भी औरत है।।
एक औरत है। तो ही जीवन है।।

महिला दिवस के आयोजन की झलकियां

पीड़ परायी किसी ने ना जानी....

मनुज ठाकुर
सहायक

एक गुड़िया एक निर्भया झूठे पुरुषार्थ के न जाने कितनी भेंट चढ़ी,
माँ बाबा के घर की रौनक न जाने कहाँ अदृश्य हुई,
कुछ सियासत कुछ कुंठित विचारों के न जाने कितने खेल चले,
चंद वोटों के कारण कितनी बार जुबान बिकी,
ऊँच–नीच जातपात, धर्म सम्प्रदाय में बँटकर कितनी बार इंसानियत मिटी।

देख समाज का हश्र सृजा का ह्रदय कंपाया,
बिटिया बोली माँ तुम मुझे कहाँ ले आयी,
है जहाँ जान से वोट कीमती, समाज के पहरेदार खामोश,
न जाने जन मानस को कब आएगा होश,
निश दिन अत्याचार बढ़े, अंधे गूँगे, बहरों की तादाद बढ़ी।

माफ करो बिटिया, तेरे सपनों का उन्मुक्त चमन देने में मैं नाकाम रही,
रोकटोक, डर भय से बचपन जीना मैं सीखा रही,
बदलते परिप्रेक्ष्य में तेरे मासूम सवालों के जबाव देने में शर्मसार हो रही।

अरे निभर्या तू तो खुशकिस्मत रही, देर से ही सही तेरे साथ न्याय तो हुआ,
तेरे जाने के बाद भी न जाने रोज कितनी निर्भया मिटी,
इंसाफ तो दूर, जाते हुए गाँव की मिट्टी भी नसीब ना हुई।

कुछ तो समाज की भी गलती रही होगी,
कुछ शिक्षक, कुछ परिवार संस्कार देने में नाकाम रहें होंगे,
अल्पायु से ही गलतियाँ छिपाने का माँ बाप का भी हाथ रहा होगा,
यदि बचपन से ही नारी सम्मान सिखाया होता तो इस कष्टदायी स्थिति में न होते।
यदि इन अत्याचारों के बाद भी जो इन गुनहगार लाडलों को बचाने में तत्पर होंगे,
धिक्कार आता है उन पर, क्या ऐसे कुपूतों से आँख मिलानें पर उन्हे लाज न आयी होगी,
कलयुग की निरंतर गहराईयों को छूनें में जो आमादा हैं,
ऐसे परिवारों,ऐसे गुनहगारों का सामाजिक बहिष्कार ही सब के लिए हितकारी है।

आज भली, कल भली, सोचते हुए वर्षों बीतें,
हे ईश, शीघ्र इस अंधकार की कालिमा को मिटाओ,
अब बस! अब बस !
प्रेम सौहार्द की फुहारों से जन को भिंगाओ,
करोड़ों की भीड़भाड़ में चंद लाखों तो इंसान बनाओ।

सच ही कही किसी ने जिस तन लागे वो तन जाने,
सृजा तेरी पीड़ परायी किसी ने ना जानी।

अटल सुरंग
लाहौल स्पीति की जीवन रेखा

दुखमोचन गोपाल
अधीक्षक

भारत के पर्वतीय राज्य हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला लाहौल स्पीति का है जिसका क्षेत्रफल 13833 वर्ग किलोमीटर एवं जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 31564 है। अर्थात घनत्व के लिहाज से प्रति वर्गकिलोमीटर सिर्फ दो व्यक्ति रहते है। इस इलाके की औसत ऊंचाई समुद्र तल से 4000 मीटर है जो सालों भर बर्फ से ढ़का रहता है। प्राकृतिक सुंदरता का अनमोल खजाना इस घाटी का वरदान है। भौगोलिक कठिनाई के कारण यहाँ जीवन यापन काफी चुनौतीपूर्ण है क्योंकि साल के 6–7 महीने आवागमन से वंचित हो जाता है। मनाली से लेह लद्दाख को जोड़ने वाला वैकल्पिक मार्ग रोहतांग से गुजरता है।

पड़ोसी देश चीन से भारत का संबंध फिलहाल तनावपूर्ण है और सीमा से सटे बॉर्डर पोस्ट को सुरक्षित बनाने की दिशा मे अटल सुरंग का निर्माण सामरिक दृष्टि से मील का पत्थर है। पीर पंजाल के कठोर चट्टानों को काटकर समुद्र तल से दस हजार फुट के ऊंचाई पर 9.2 किलोमीटर लंबा घोड़े की नाल आकार में निर्मित यह सुरंग दुनिया का सबसे लंबा राजमार्ग सुरंग है जिसके शुरू होने से मनाली से लाहौल स्पीति होकर लेह लद्दाख पहुँचने में यात्रा समय 4–5 घंटा कम हो जाएगा। इस सुरंग के निर्माण की शुरुआत 2002 मे हुई और दिनांक 3 अक्टूबर 2020 को इसका शुभारंभ किया गया। जहां लाहौल स्पीति के वासियों के लिए यह सपनों के सच होने जैसा था वही दूसरी तरफ सेना बल के लिए सभी मौसम मे हिमालय के दुर्गम सीमावर्ती इलाके और सीमा चौकियों तक सैन्य समान और आयुध पहुँचाने का ठोस मार्ग सुलभ हो गया।

हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत के साथ चीन की सीमा लगभग तीन हजार सौ किलोमीटर से भी अधिक है और प्रतिकूल परिस्थितियों मे हमारे जबाज सैनिक मौसम के थप्पड़ों से जूझते हुए अपनी सीमाओं की रक्षा करते है। वर्ष 2020 में दोनों देशों के सैनिकों के बीच खूनी संघर्ष हुआ था। सिक्किम के डोकलाम का टकराव पूर्व का सिलसिला बयान करता है।

चीन की तरफ सैन्य जमावड़ा और आधार शिविर इस तरफ इशारा करता है कि भारत को भी उसी भाषा देने के लिए इस क्षेत्र में व्यापक सैन्य तैयारी को और मजबूत करना चाहिए। अटल सुरंग इस दिशा में सराहनीय कदम है।

विविध गतिविधियां

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस

हिम–ज्योति अंक 2 विमोचन

क्षेत्रीय निदेशक का सम्मान अधिकारी संघ द्वारा

अधिकारी संघ द्वारा डायरी का लोकापर्ण

अधिकारी संघ द्वारा कैलेंडर का लोकापर्ण

कर्मचारी संघ के चयनित पदाधिकारी

कोरोना वैक्सीन लेते कर्मचारी

जाखू मंदिर

अभिषेक तिवारी
प्रवर श्रेणी लिपिक

यूं तो शिमला की वादियाँ अपनी खूबसूरती और आकर्षण के लिए जानी जाती है, पर्यटकों को लुभाने में इसका कोई तोड़ नहीं, यहाँ स्थित जाखू मंदिर भी अपने आप में एक आकर्षण केंद्र है।

समुद्र तल से 8048 फुट की ऊंचाई पर स्थित ये मंदिर बर्फीली चोटियों और घाटियों एवं शिमला के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। यहाँ पर्यटक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के लुभावने दृश्य का भी आनंद ले सकते है। शिमला आने वाले पर्यटक इस मंदिर के दर्शन अवश्य करते है। ऐसी मान्यता है की यह मंदिर रामायण काल का है।

पौराणिक कथा

इस मंदिर के लिए एक विख्यात कथा के अनुसार श्री राम और रावण के युद्ध के दौरान जब युद्ध भूमि में लक्ष्मण जी मूर्छित हो गए थे उस समय राम भक्त हनुमान संजीविनी बूटी लेने के लिए आकाश मार्ग से हिमालय की ओर जा रहे थे। आकाश मार्ग से जाते हुए हनुमान जी ने जाखू पहाड़ी पर विश्राम किया था और अपने अन्य वानर साथियों को विश्राम करता हुआ छोड़कर हनुमान जी आगे निकल गए थे। हालांकि लौटते समय उनका एक असुर से युद्ध होने लगा और वे जाखू पहाड़ी पर नहीं जा पाए। माना जाता है कि वानर साथी इस पहाड़ी पर बजरंग बली क लौटने का इंतजार कर रहे है। इस वजह से आज भी यहां बड़ी संख्या मे वानर पाए जाते है। इन वानरों को हनुमान जी का ही रूप कहा जाता है। मान्यता है कि यहाँ मांगी गई मुराद पूरी होती है। इस मंदिर को हनुमान जी के पैरों के निशान के पास बनाया गया है। आज भी भगवान हनुमान के पद चिन्हों को संगमरमर से बनवा कर रखा गया है।

यहाँ हनुमान जी की विशाल प्रतिमा भी स्थापित है जिसकी ऊंचाई 108 फुट है जिस वजह से इसे शिमला में कहीं से भी देखा जा सकता है। यह प्रतिमा 2010 में यहाँ स्थापित की गई थी।

जाखू की पहाड़ी पर सरकार द्वारा कई ट्रेकिंग और पर्वतारोहण की भी व्यवस्था की गई है जिसका आनंद सभी ले सकते है।

गसोता महादेव मंदिर हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)

राकेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

यह मंदिर हिमाचल के हमीरपुर जिला के गसोता नामक गाँव में स्थित है जो की जिला हमीरपुर मुख्यालय से 15 किलोमिटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग हजारों साल पुराना है। इस मंदिर में श्रद्धालु देश भर से शिवलिंग की पूजा करने के लिए आते है। गसोता महादेव का पवित्र नाम पुराणों में पांडव काल से जुड़ा हुआ है। पुराणों के अनुसार पांडवों ने अज्ञातवास के दौरान गसोता महादेव मंदिर में कुछ समय व्यतीत किया था जिसके चलते लोगों में आज भी आस्था कूट कूट कर भरी है।

इस मंदिर की स्थापना के बारे में कहा जाता है की एक बार इसी गाँव का एक किसान अपने खेत में हल जोत रहा था उस दौरान हल किसी वस्तु से टकराया तो वहाँ से जलधारा निकली। बाद में हल जब दोबारा टकराया तो वहाँ से दूध निकला फिर जब तीसरी बार जब हल टकराया तो खून निकलना शुरू हो गया और उसी समय किसान की आँखों की रोशनी चली गई। बाद में किसान को आए हुए सपने के अनुसार वहाँ पर शिवलिंग निकल और उस जगह पर मंदिर को स्थापित करने के लिए कहा। ग्रामीणों के सहयोग से किसान ने वहाँ शिवलिंग स्थापित किया आर अपनी आँखों की रोशनी मांगी और उसकी मनोकामना पूरी हुई। आज भी शिवलिंग पर हल के टकराने के निशान है।

डलहौजी

सुभाष चंद्र गुप्ता
उप निदेशक (सेवा निवृत)

यह जीवन भी क्या जीवन है ? इसमें कोई विराम नहीं ? विश्वास नहीं ? भौतिकता के परिवेश में हमने जीवन को अधिक भौतिक बना लिया है, इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है, आवश्यकताओं का कोई दायरा नहीं है। व्यक्ति यह भी नहीं जानता है वह किसके पीछे ? क्यों भाग रहा है। उसने अपने जीवन को इष्ट बना लिया है। भागती दौड़ती जिंदगी में प्रगति के प्रयास में एक समस्या का समाधान, दूसरी समस्या को खड़ा कर देता है, इसलिए हम तनावग्रस्त और असंतुष्ट दिखाई देते हैं, एक अवसाद हमारे चारों तरफ तैरता रहता है। आवश्यकता है, भौतिकता के परिवेश से निकलकर प्रकृति की गोद में पहुंचने की, हम प्रकृति के जितने समीप होंगे, उतना ही हमारा जीवन उत्साहपूर्ण, उल्लासपूर्ण और रोमांचक होगा, इसके लिए हमें देशाटन पर निकलना होगा, पर्यटन में हम रोमांच के साथ प्राकृतिक दृश्यों का भी आनंद लेना चाहते हैं तो हम प्रकृति की अनमोल धरोहर डलहौजी (हिमाचल प्रदेश) जाना होगा।

डलहौजी पर्यटन स्थल न केवल भ्रमण के लिए उपयुक्त है, बल्कि यहां की स्वच्छ, ताजी हवा, शांत वातावरण तथा जलवायु पर्यटकों के लिए स्वास्थ्य वर्धक तथा स्फूर्तिदायक है। यह 2036 मीटर ऊंचाई पर स्थित है और 13 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। लार्ड डलहौजी ने सन् 1854 में इसे बसाया और विकसित किया था, लार्ड डलहौजी के नाम पर इसका नाम डलहौजी रखा गया था। अंग्रेजों के जमाने में गर्मियों के समय यह उनका प्रिय हिल–स्टेशन हुआ करता था। उस समय के नौकरशाह और अंग्रेज अक्सर यहां अपनी गर्मियों की छुट्टी बिताने आते थे, आज भी यहां के पुराने चर्च और सड़कों के नाम ब्रिटिश काल की याद दिलाते हैं। डलहौजी दरसल धौलधार पर्वत श्रृंखला पर बसा हुआ है। पहाड़ों पर पक्तियों में उगे देवदार के पेड़ों की ऊंची–ऊंची डालियां, ऐसा प्रतीत होती है जैसे वह एक–दूसरे से मुकाबले की होड़ में हों, टेढ़े–मेढ़े दिल दहला देने वाले रास्तों के साथ बरसाती नदियां कल–कल का निनाद करती हुई अपना सफर तय करती हैं। यहीं पर डलहौजी का मशहूर रैम्बा टी स्टैन्ड है। ऐसा कहा जाता है, भारतीय राजनीति के महान क्रांतिकारी सेनानी सुभाष चंद्र बोस ने अपने स्वास्थ्य लाभ के लिए यहां शरण ली थी, इसी के पास सुभाष बावली है यहां के प्राकृतिक झरने से बोस की असाध्य बीमारी में बहुत फायदा पहुंचा। आगे की यात्रा का अगला पड़ाव पंचपुला है, यहा पर पांच पुल हैं जो कि 2 किलोमीटर की दूरी तक बने हुए हैं, इसी के आधार पर इसका नाम पंचपुला है, यहां महान क्रांतिकारी भगत सिंह के चाचा जो स्वंय

महान क्रांतिकारी थे, अजीत सिंह की समाधि है। यह जगह ट्रैंनिंग और दूसरे रोमांचक खेलों के चलते बच्चों को बहुत पसंद है। इस खूबसूरत यात्रा का अगला पड़ाव खज्जियार है जो इस सफर का विशेष आकर्षण है यह डलहौजी से 27 किलोमीटर दूर है, सफर के मध्य फैला 1.5 किलोमीटर लम्बा और 1 किलोमीटर चौड़ा विशाल हरा–भरा मैदान है जो यहां के प्राकृतिक सौंदर्य को अनुपम छटा प्रदान करता है। यहां की फिजाओं में हवाओं के घुंघरु गूँजते हैं। नोरम घाटियों के संकरे रास्ते पारकर खज्जियार पहुंचने के सफर का आनन्द बहुत रोमांचक था। प्लेट के आकार का लैंडस्कैप जिसके चारों और बहुत खूबसूरती से सजे के पेड़ हैं। इसे इसकी खूबसूरती के लिए मिनी स्विटजरलैंड कहा जाता है। खज्जियार के टेढ़े–मेढ़े रास्तों के बीच घने जंगलों की ऐसी कतार है कि धूप भी पृथ्वी तक नहीं पहुंच पाती है। जंगलों के बीच से बर्फ की ढ़की चोटियां दिखाई देती है, मानो देवदार के पेड़ों ने सफेद टोपियां पहन रखी है। इससे थोड़ा आगे मिलनी देवी का मंदिर है जहां पहुंचने के लिए आपको डेढ़ किलोमीटर चढ़ाई चढ़नी होती है। यह डलहौजी का सबसे बड़ा प्वाइंट है। यहां पर पर्वतों की श्रंखलाओं में झरने बह रहे हैं जो अपने कल–कल का निनाद करते हुए कलरव कर रहे हैं। यह कल–कल लोगों की थकान दूर करते हैं। इसके पास ही खजीनाग मंदिर है जो पांडवों के समय की सुंदर नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। साथ ही एक बड़ा घास का सुंदर मैदान है, जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ने मखमली चादर बिछा दी है। घास के इस मैदान के आस–पास में वृताकार चक्र के रूप में घुड़सवारी का आनंद ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहां के मुख्य आकर्षण हैं खज्जियार मंदिर, गोल्फ मैदान, खज्जियार झील, स्थानीय देवता का मंदिर जिसके ऊपर का हिस्सा सोने से मढ़ा है।

डेनकुंड – यह डलहौजी से 10 किलोमीटर दूर है तथा 2745 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां से तीन नदियां – व्यास, रावी और चिनाव को देखा जा सकता है। यहां की छटा अनुपम है।

काला टाप – यह एक खूबसूरत स्थान है, इस स्थान से यहां की पहाड़ियों और चोटियों की छटा बहुत सुंदर तथा स्पष्ट दिखाई देती है। यहां पर रूकने के लिए फारेस्ट हाउस की व्यवस्था है।

जदरी घाट – यह पिकनिक के लिए एक खूबसूरत स्थान है। यहां पर चंबा के भूतपूर्व शासक का राजमहल है। देवदार व चीड़ के लंबे वृक्षों से घिरा यह मनमोहक स्थान है। रावी नदी के ऊपर बसे चंबा में कई पुराने मंदिर हैं।

डलहौजी से तिब्बती हस्तकला से निर्मित चीजें तथा कालीन खरीदे जा सकते हैं। डलहौजी जाने के लिए अप्रैल से नवंबर माह के बीच का समय सबसे उपयुक्त है। यहां सड़क मार्ग, रेल मार्ग तथा वायु मार्ग से पहंचा जा सकता है। डलहौजी का निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट है। पठान कोट से डलहौजी की दूरी 80 किलोमीटर है। जिसकी यात्रा बस या टैक्सी से की जा सकती है। डलहौजी का निकटतम हवाई अड्डा जम्मू व अमृतसर है। जम्मू या अमृतसर से आगे का सफर टैक्सी या बस से की सकती है। डलहौजी की यात्रा को उसके पाकृतिक सौंदर्य, उत्तम जलवायु, मनमोहक पर्यटन स्थलों और वहां की फिजाओं में गूंजते हवाओं के घंघरूओं के लिए याद किया जाता है।

भरमौर

नरैन सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

भरमौर भारत के हिमाचल प्रदेश राज्य के जिला चम्बा में स्थित है। भरमौर का ऐतिहासिक महत्व है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग–154ए (एन.एच.–154ए) पर स्थित है और भरमौर चम्बा की प्राचीन राजधानी हुआ करता था। शहर के बीच स्थित चौरासी मंदिर लगभग 1400 वर्ष पुराना है और नगर का सांस्कृतिक केंद्र है।

चौरासी मंदिर

चौरासी मंदिर भरमौर शहर के बीच स्थित एक हिंदू धार्मिक स्थल है। यह लगभग 1400 वर्ष पुराना है। इसमें एक केंद्र की परिमिति पर शिवलिंग पर आधारित चौरासी मंदिर बने हुए हैं जिनके कारण इसका नाम चौरासी रखा गया है। माना जाता है कि भरमौर के राजा सहिल वर्मन ने मंदिर का निर्माण 84 सिद्धकों के नाम पर करवाया था। यह योगीजन कुरुक्षेत्र से आए थे और मणिमहेश झील व मणिमहेश कैलाश पर्वत के दर्शन के लिए जा रहे थे। रास्ते में भरमौर में रुके और वहां साधना की। उन्होंने निःसंतान राजा को दस पुत्रों तथा एक पुत्री का वरदान दिया। आस्था है कि मणिमहेश झील का तीर्थ इस मंदिर के दर्शन किए बिना पूरा नहीं होता। यह मंदिर शिव और शक्ति को समर्पित है।

मणिमहेश झील

चम्बा जिले के भरमौर क्षेत्र में 4,080 मीटर (13,390 फुट) की ऊंचाई पर स्थित एक पर्वतीय झील है। यह हिमालय की पीर पंजाल श्रृंखला में मणिमहेश पर्वत के चरणों में स्थित है। हिंदू आस्था में तिब्बत की मानसरोवर झील के बाद इसे पवित्र झील माना जाता है। मणिमहेश यात्रा जुलाई–अगस्त के दौरान होती है। इन दिनों पवित्र मणिमहेश झील हजारों तीर्थयात्रियों से भर जाती है। यहीं पर सात दिनों तक चलने वाले मेले का आयोजन भी किया जाता है। यह मेला जन्माष्टमी के दिन समाप्त होता है। कैलाश चोटी के ठीक नीचे से मणिमहेश गंगा का उद्भव होता है। कैलाश पर्वत की चोटी पर चट्टान के आकार में बने शिवलिंग की इस यात्रा में पूजा की जाती है। अगर मौसम उपयुक्त रहता है तो तीर्थयात्री भगवान शिव की इस मूर्ति का दर्शन लाभ लेते हैं।

कश्मीर

ऋषि
अधीक्षक

मेरे दिल की इच्छा थी कि मैं कभी कश्मीर घूमने जाऊँ। मैंने कश्मीर के बारे में कुछ–कुछ पढ़ा था कुछ–कुछ सुना था। जिस किसी से भी कश्मीर के बारे मे पूछा या सुना तो वो सिर्फ यही कि कश्मीर स्वर्ग है, जन्नत है। परन्तु मैं अपने किसी दोस्त को कश्मीर चलने के लिए कहता तो अक्सर यही जवाब मिला करता था हमें वहां मरने नहीं जाना। वहां बहुत आतंकवाद है। वैसे कहा जाए तो कश्मीर स्वर्ग है इस धरती पर परन्तु आतंकवाद और दंगा–फसाद के कारण लोगों के मन में यह स्थान नरक से कम नहीं दिखाई देता है। चलिए अपना कश्मीर भ्रमण का कुछ अनुभव भी आपके साथ बांटता हूं। मैं दिल्ली से साथ लगते हुए शहर फरीदाबाद में रहता हूँ जो हरियाणा राज्य का एक जाना माना औद्योगिक क्षेत्र है। यहां का मौसम, भाषा, खाना, रहन– सहन लगभग दिल्ली के लोगों की तरह है। इसलिए मैं अपनी कश्मीर यात्रा की तुलना अपने इस लेख में दिल्ली से करता हुआ ही नजर आउंगा।

यह बात अप्रैल 2014 की है मैंने इस बार किसी दोस्त से न पूछकर अपनी धर्म पत्नी से पूछा कि क्या वह मेरे साथ कश्मीर घूमने चलेंगी और कमाल की बात है कि मुझे यहां निराशा नहीं मिली मेरी पत्नी ने तुरन्त हां कर दी। मैंने भी तुरन्त हवाईजहाज की टिकट बुक करवा ली तथा कश्मीर की ही किसी प्राईवेट टूर कम्पनी से टूर का पैकेज ले लिया। यहां से शुरु हो गई हमारी कश्मीर यात्रा।

हम लोग हवाईजहाज में थे कि जहाज के क्रू मैम्बर ने घोषणा की कि हमारा हवाईजहाज 15 मिनट के अंतर्गत श्रीनगर के हवाईअड्डे पर उतरने वाला है। जहाज में मेरी सीट खिड़की वाली थी। मैंने खिड़की से बाहर की तरफ झांक कर देखा हमारा जहाज हिमालय पर्वत के ठीक ऊपर उड़ रहा था। हिमालय पर्वत सफेद बर्फ से पूरी तरह ढ़का हुआ नजर आ रहा था और बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे कि सफेद चादर ओढे यह विशाल पर्वत सो रहा हो। जैसे–जैसे जहाज जमीन के करीब आता गया तो खिड़की से झांकने पर श्रीनगर का शहर साफ दिखने लगा जहां छोटे छोटे घर दिखाई देने लगे जिनकी छत शायद टीन की बनी हुई थी जो कि सूरज की रोशनी पड़ने पर चमक रही थी। और वो रोशनी आंखों को भ्रमित करने का पूरा प्रयास कर रही थी।

ऐसा लग रहा था कि जमीन पर दिन में तारे चमक रहे हो। हवाई जहाज श्रीनगर हवाईअड्डे पर उतर गया। श्रीनगर का मौसम बिल्कुल ऐसा था जैसे दिल्ली की तरफ का मौसम जनवरी –फरवरी में होता है कच्ची –कच्ची धूप निकल रही थी और ठंडी हवा चल रही थी। हम लोगों के हवाईअड्डे पर उतरते ही कार ड्राईवर का फोन आ गया और ड्राईवर ने हमारा सामान गाडी में रख दिया व हमें सूचना दी कि अब हम यहां से पहलगाम के लिए निकल रहे है। पहलगाम श्रीनगर से 90 कि.मी. की दूरी पर था मतलब श्रीनगर से पहलगाम लगभग 03 घंटे का रास्ता था। हम लोग दोपहर के 03 बजे करीब श्रीनगर पहुंचे थे और हमें पहलगाम पहुँचते–पहुँचते शाम के 06:30 बज गए। इस दौरान की यात्रा में मैंने ड्राईवर से उसके बारे में पूछा कि वो कहां से है और गाड़ी चलाने के अलावा और क्या करता है। उसने बताया कि उसका गांव तंगमारंग है जो कि गुलमर्ग से पहले पड़ता है और उसका मूल कार्य गाड़ी चलाना ही है। मैंने उससे यहां के लोगो की दिनचर्या के बारे में पूछा, उसने बताया कि कश्मीर के लोग किसान हैं और टूरिस्ट से संबधित कार्य करते हैं। इन्हीं से उनका घर चलता है। यहां मूल रुप से केशर, सरसों, सेब, नाशपाति, चेरी की खेती की जाती है। इस दौरान मैं कार की खिड़की से बाहर का नजारा देखता हुआ जा रहा था अगर आप दिल्ली की तरफ से है तो आपको चहलकदमी करते हुए लोगों को देखना आम लग सकता है परन्तु श्रीनगर की यात्रा के दौरान मुझे ऐसा दिखाई नहीं दिया। रोड पर बहुत कम लोग दिखाई दे रहे थे। सब कुछ सामान्य सा ही नजर आ रहा था। रास्ते में हर जगह चौराहे गलियों, पैट्रोल पम्प, खेतों के आस–पास भारतीय फौज की तैनाती आम रुप से देखी जा सकती

थी। किसी तरह का कोई उपद्रव न हो। पुलिस भी हर जगह पर नाके लगाए नजर आ रही थी। यह सब देखकर ऐसा लग रहा था शायद कोई मंत्री का दौरा होना है परन्तु हमारे ड्राईवर ने बताया कि यहां इस तरह की तैनाती हमेशा रहती है। पहाड़ो की छोटी–छोटी पगडंडी से होते हुए ड्राईवर कार को बड़ी होशियारी से निकालता हुआ एक छोटे सी टपरी के पास कार को रोक देता है और मुझसे कहता है, ''सर हमें चाय पीनी है और आप भी पी लीजिए''। मैंने चाय पीने से पहले यहां की चाय के बारे मे जानने की इच्छा व्यक्त की और पूछा कि, किस तरह की चाय यहां मिलती है जिस तरह दिल्ली में मिलती है क्या उसी तरह की चाय यहां भी टपरी पे उपलब्ध है। उसने हमें बताया कि अधिकतर लोग यहां दिन में तीन बार चाय पीते है सुबह –दोपहर में नमकीन चाय और शाम के समय मीठी चाय। मैं नमकीन चाय के बारे में सुनकर चौंक गया और कहने लगा कि हमारे तरफ तो नमकीन चाय तब पिलाते है जब गले में खरास हो जाए। यह बात सुनकर ड्राईवर हंस पडा और बोला नहीं सर यह नमकीन चाय कहवा होती है और कहवा का मजा नमकीन में ही होता है। हमने मीठी चाय ही पी और थोड़ी देर बाद वहां से चल दिए। हम करीब 6:30 बजे पहलगाम पहुँच गए। सूरज डूब रहा था। मौसम एक दम मस्त था। होटल चारों तरफ से हिमालय की पहाड़ियों से घिरा हुआ था और पहाड़ियाँ सफेद बर्फ से ढ़की हुई थी। बड़ा ही मनमोहक दृश्य था। ऐसा शायद हम किसी काल्पनिक तस्वीर या किसी फिल्म में देखा करते हैं। फिर हमने ड्राइवर से पूछा कि अगले दिन हमें कहाँ जाना है तो ड्राईवर ने कहा ''अगले दिन यहां से हम सुबह 9 बजे नाश्ता करके पहलगाम के साईट सीन के लिए निकलेंगं''। सुबह सुबह हम तैयार हो गए और होटल वालों ने नाश्ते में चाय के साथ ब्रैड पकौड़े और छोले भटूरे दिये। लगा होटल वालों को पता लग गया था कि ये दिल्ली के तरफ के लोग है इसलिए शायद ऐसा नाश्ता दिया। नाश्ता अच्छा था। नाश्ता करके हम होटल से बाहर आए जहां हमारा ड्राईवर गाड़ी लगा कर खड़ा था। हमने उसे चलने के लिए इशारा किया परन्तु उसने जबाब में कहा सर अभी हम आगे गाड़ी नहीं ले जा सकते। मैंने पूछा ऐसा क्या हो गया सब ठीक तो है। उसके बगल में दो तीन गाड़ियां और खड़ी थी जिनके ड्राईवर भी वहीं खड़े थे। उनमें से एक ने कहा कि आगे गांव में पत्थर बाजी हो रही है और आप लोगों को वहां से निकालकर पहलगाम की मार्केट ले जाना थोड़ा खतरे से भरा हुआ है। फिर मैंने पूछा कि ऐसा क्या हो गया तो डाईवर ने सीधा जबाव न देते हुए कहा कि यहां मौसम और हालात बदलते देर नहीं लगती। मैं समझ गया मसला गंभीर है। फिर मैंने उसे पूछा कि यह कब तक सामान्य होगा जबाव में उसने कहा कुछ नहीं पता एक घंटा, दो दिन या 10 दिन कभी भी खत्म हो सकता है। फिर वहां खड़े सभी डाईवरों ने आपस में कुछ सलाह की और अपने अपने गेस्टों को गाडी में बैठने के लिए कह दिया। मेरी उत्सुकता बढ़ गई और मैंने पूछ लिया कि ऐसा अब 05 मिनट में क्या हो गया जो अब आप लोग राजी हो गए चलने के लिए तो ड्राईवर ने जबाब दिया कि अब हम किसी अन्य गांव से होते हुए जाएंगे वहां से नहीं निकलेंगे जहां पत्थरबाजी हो रही हो। अब हम पहलगाम मार्केट चलने को तैयार थे। पहलगाम मार्केट वहां से 10 –12 कि0मी0 दूर था। गांव की छोटी छोटी गलियों से होते हुए हम लोग पहलगाम की मार्केट पहुँच गए। ड्राइवर ने भी चैन की सांस ली कि उसने सुरक्षित हमें पहुंचा दिया। मैंने उसे कहा तुम नर्वस दिख रहे हो तो जबाव में उसने कहा, सर अगर आप लोगों को कुछ हो जाता तो हमारे लिए यहां जीना मुश्किल हो जाता और टूरिस्ट तो हमारे लिए रोजी रोटी और ऊपर वाले की तरह है। फिर उसने कहा, सर यहां से आपको यूनियन की टैक्सी घूमने के लिए करनी पड़ेंगी। थोडी दूर पर ही यूनियन टैक्सी का चार्ट था जिसमें पूरे दिन के 1800 रुपये थे परन्तु हम थोड़ा लेट पहुंचे थे तो हमने पूछा कि आप हमें शाम के 04 बजे तक कितने साईट सीन करा सकते है तो एक टैक्सी वाले ने कहा कि आप तीन साईट सीन, चांदवाडी, आरु वैली, बेताब वैली बड़े आराम से घूम सकते है और उसने उसके रेट 1600 रुपये बताया। हम तैयार हो गए और सफर शुरु हो गया। वहां से टैक्सी में वो हमें चांदवाड़ी होते हुए बेताब वेली ले गया और हमारे ड्राईवर–सह गाईड ने बताया कि इस वैली का नाम बैताब इसलिए रखा गया है क्योंकि यहां सन्नी देओल और अमृता सिंह की बेताब मूवी की शूटिंग हुई थी। हां वही मूवी जिसका गाना है '' जब हम जवां होंगे जाने कहां होगे '' पूरी वैली चारों तरफ सफेद रंग के पहाड़ों से घिरी हुई थी। चारों तरफ खूबसूरत फूल

आंसू और डर हमारे विश्वास और योग्यता को खत्म करता है। अतः यदि हम कुछ खोते हैं
तो उस नुकसान पर रोने की जरूरत नहीं है बल्कि योजना बनाएं, कार्रवाई करें, जोखिम उठाएं और जीत के अवसर पैदा करें।

और कहीं कहीं मैदान पर बर्फीली चादर जहां बर्फ नहीं हरी हरी घास से भरा हुआ मैदान बगल से बहती हुई नदी यह एक ऐसा दृश्य जिसकी जितनी तारीफ करुँ कम है। हम लोगों ने वहां साईट सीन का आनंद घोड़े पर घूम कर लिया और जहां चाहा वहां घोड़ा रोक कर प्रकृति का आनंद लिया। यहां से हम लोग फिर आगे आरुवैली भी घूमे जो कि बहुत खूबसूरत थी। फिर हम वहां से निकल गए और अपने होटल पहुँच गए। अगले दिन का प्रोगाम हमने ड्राईवर से पूछा तो उसने कहा कि अगले दिन सुबह हम गुलमर्ग चलेंगे। फिर सुबह हम लोग 07 बजे गुलमर्ग के लिए निकल गए रास्ते में ड्राइवर ने किसी टपरी पर गाड़ी रोक कर कहवा पिलाया। वहीं नजदीक गांव वालों के खेत थे। मेरा मन हुआ कि हम खेतों की तरफ जा कर देखें ये लोग क्या उगाते हैं। खेत की देखरेख कर रहे एक किसान से मैंने मुलाकात की जिसने हमें वहाँ अपने खेतों में स्ट्रॉबेरी और केसर की खेती दिखाई। जिसे देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। मौसम बहुता सुहाना था ठंड़ी–ठंड़ी हवा चल रही थी और कच्ची कच्ची धूप पड रही थी कभी बादल आसमान में छा जाते तो कभी आसमान एक दम साफ हो जाता। ऐसा लग रहा था, जैसे सूरज के साथ लुका–छुपी का गेम हो रहा हो। मुझे एक पेड़ दिखाई दिया जो कि सफेद रंग के फूलों से पूरी तरह भरा पड़ा था कोई पत्ता भी उस पर नजर नहीं आ रहा था। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने उस किसान भाई से पूछा किसका पेड़ है तो उसने कहा ये चेरी का पेड़ है। बहुत ही सुन्दर पेड़ था। हम लोग वहां से चल दिए। गुलमर्ग की पहलगाम से दूरी लगभग 100 कि0 मी0 थी। हमें वहां पहुँचते–पहुँचते लगभग सुबह के 11 बज गए। वहां से हमने गंडोला राईड के माध्यम से गुलमर्ग के सुन्दर नजारों का भ्रमण किया। गुलमर्ग पूरी तरह से बर्फ से ढ़का हुआ था और बहुत सुन्दर था। हमने वहां स्पोर्टस किये फिर काफी थक जाने के बाद हमने ड्राईवर को फोन किया कि हमे अपने होटल ले चले तो उसने कहा कि श्रीनगर में बोटहाउस में रात में रुकने का इंतजाम किया हुआ है। श्रीनगर वहां से लगभग 50 कि0मी दूर था लगभग 02 घंटे का रास्ता था। फिर हम वहां से 04 बजे निकल गए और करीब 6:30 शाम तक अपने बोटहाउस में पहुँच गए। बड़ा ही सुन्दर बोटहाउस था यह बोटहाउस डलझील पर बना हुआ तैरता हुआ होटल था। अगली सुबह बोटहाउस से हमने डलझील के नजारे लिये। सुबह सुबह बोटहाउस से हमें एक शिकारे में बैठाया गया। शिकारा एक तरह की नाव होती है जो कि एक छत से ढ़की हुई होती है और उसमें गद्दे लगे होते है। जिसमें अधिक से अधिक चार जन बैठ सकते हैं। हमने घंटे भर शिकारा में घूम कार झील का आनंद उठाया। नाव चलाने वाले ने हमारा शिकारा कमल के फूलों के बीचो–बीच लगा दिया वह दृश्य बहुत ही सुन्दर था। ये ऐसे प्रकृति के नजारे है जिनका विवरण में अपने लेख के माध्यम से संपूर्ण रुप से कभी नहीं कर पाऊँगां। थोड़ी देर बाद शिकारा चलाने वाले ने हमें चार चिनार आइलैंड चलने को कहा। हम लोग चलने के लिए राजी हो गए। वो हमें झील के बीचो बीच बने एक टापू पर ले गया जो कि बहुत छोटा टापू था और जिस टापू को चार चिनार के पेडों ने घेर रखा था इसलिए इसका नाम चार चिनार टापू था। बहुत बेहतरीन और प्रकृति का अद्भूत करिश्मा था। फिर हमारे ड्राईवर का फोन आ गया और उसने हमे आगे के प्रोगाम के तहत श्रीनगर के अगले साइट साईन को घूमाने को कहा। जहां से वो हमें शालीमारबाग, इंदिरा गांधी, तूलिप गार्डन और निशांत गार्डन ले गया। ये तीनो गार्डन इतने खूबसूरत हैं जैसे आप जन्नत में हों। कहा जाता है कि शालीमारबाग तो जन्त की तर्ज पर ही बना है। हम लोग शाम को बोटहाउस पर लौट आये और अगले दिन हमारी वापसी की फ्लाईट थी। यहीं पर हमारी यात्रा पर विराम लगता है परन्तु ये यात्रा खत्म नहीं होगी। मैं फिर से कश्मीर जाऊँगां और आपको भी कहता हूँ कि कश्मीर जरूर जाएँ। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा।

सच में जहांगीर ने बिल्कुल सही कहा था कि ''गर फिरदौस बर रुए जमी अस्त, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो'' अर्थात अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है और सिर्फ यहीं है।

राजभाषा हिन्दी कार्यशाला

राजभाषा हिन्दी कार्यशाला

आपके पत्र

प्रशंसा पत्र

सेवा में,

सहायक निदेशक (प्रभारी रा.भा)
क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
बद्दी (हिमांचल प्रदेश)।

विषय- गृह पत्रिका 'हिम ज्योति' के अंक वर्ष 2019-20 के संदर्भ में प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका ' हिमज्योति ' के दूसरे अंक की प्राप्ति हुई। हिमांचल का सौंदर्य पत्रिका के आवरण में प्रतिबिंबित है। साथ ही, यह इस क्षेत्र की संस्कृति को भी दर्शाता है। पत्रिका में विविध प्रकार की रचनाओं का समावेश है जो इसे रुचिकर बनाती है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका और अधिक आकर्षक बन पड़ी है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं ।

भवदीया

अंकिता बनर्जी
उपनिदेशक (राजभाषा)
पश्चिम अंचल
क्षेत्रीय कार्यालय ,मुम्बई

सेवा में,
श्रीमान हरपाल सिंह,
सहायक निदेशक(रा.भा.प्र.),
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
क्षेत्रीय कार्यालय, पंचदीप भवन,
हाउसिंग बोर्ड, फेस 1, साईं रोड,
बद्दी(हि.प्र.)–173 205

विषय–विभागीय हिंदी पत्रिका "हिम–ज्योति" वर्ष 2019–2020 अंक 2 के लिए धन्यवाद।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्रांक संख्या 40.ए–49/11/06/2018/रा.भा. दिनांक–03.07.2020 के द्वारा गृह पत्रिका "*हिम–ज्योति*" वर्ष 2019–2020 अंक–2 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पुस्तक के सफल प्रकाशन में *मान्यवरों के संदेश एवं संरक्षक की कलम से* ....अति सराहनीय कदम हैं। इस अंक के लेख, कविताएं, कहानियां एवं छायाचित्र अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। आपकी पत्रिका की रचनाएं "एक संकल्प साक्षरता/एक संदेश–युवा शक्ति", "जिजिविषा", "माँ का जन्मदिन", "अनुवाद करता हूँ", "चामुंडा माता का मंदिर", "विश्व महाशक्ति–भारत", "हिमाचली लोकगीत" आदि विशेष रूप से सराहनीय है। आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

धन्यवाद!

भवदीय

(जीवनाथ झा)
सहायक निदेशक, (रा.भा. प्रभारी)

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.),
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी. निगम ,
बद्दी (हिमाचल प्रदेश) -173205

विषय: गृह पत्रिका "हिम ज्योति" के अंक-2 के प्राप्त होने के संबंध में।

महोदय,

आपके द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "हिम ज्योति" का अंक-2 प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही सजीव है। सुंदर छायाचित्रों से सुसज्जित पत्रिका को और भी आकर्षक बनाती है। पत्रिका की प्रस्तुति एवं साज-सज्जा आकर्षक एवं मनोहारी है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन उच्चकोटी का है। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख सरल, सहज एवं उपयोगी हैं। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है। रचनाओं में, " हिमाचल प्रदेश में क.रा.बी.योजना", "निगम में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का संक्षिप्त विवरण", "एक संकल्प साक्षरता/एक संदेश", "विराकास बैठक/राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस (फोटो गैलरी)", "राष्ट्रलिपि देवनागरी", "टोपी ", "नजरिया-जीवन जीने का" एवं "हिमाचली लोकगीत " आदि प्रशंसनीय हैं। कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र पत्रिका को जीवंत और रोचक बनाते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आपको तथा संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

कृते उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

सेवा में,

निदेशक,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी,
हिमाचल प्रदेश। पिन - 173205

विषय : विभागीय हिन्दी पत्रिका 'हिम–ज्योति' के द्वितीय अंक की प्राप्ति सूचना बावत।

महोदय,

मुख पृष्ठ पर हिमाच्छादित गगनचुम्बी पर्वत श्रृंखला के विहंगम दृश्य को समेटे तथा कुल्लू के दशहरे के भव्य उत्सव की झलक लिए आपके कार्यालय में राजभाषा 'हिन्दी' की प्रगति की प्रखर उदघोषक विभागीय पत्रिका 'हिम–ज्योति' के द्वितीय अंक की प्राप्ति हुई। हार्दिक साधुवाद।

आंतरिक कलेवर में सतरंगी छटा ने पत्रिका को भव्यता प्रदान की है। विशेष रूप से राष्ट्र लिपि देवनागरी, मंजिल तक कैसे पहुंचें, नजरिया-जीवन जीने का, अनुवाद करता हूँ सहित सभी रचनाएँ स्तरीय हैं। प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थापित 'ब्रजेश्वरी माता मंदिर' से संबंधित जानकारी वहाँ जाने की उत्कंठा पैदा करती है। कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की चित्रावली रोचकता लिए हुए है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया कार्यालय का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

शुभकामनाओं के साथ ...

आपका,

सेवा में,

क्षेत्रीय निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
पंचदीप भवन, हाउसिंग बोर्ड, फेस-1,
साईं रोड, बद्दी, हिमाचल प्रदेश-173205

विषय: विभागीय हिन्दी गृहपत्रिका 'हिम ज्योति' के दूसरे अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका '**हिम ज्योति**' का दूसरा अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है और मुख पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका के सभी लेख रोचक व ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री सन्नी मल्होत्रा, सहायक द्वारा रचित '**ब्रजेश्वरी माता मंदिर**', हरपाल सिंह, सहायक निदेशक द्वारा रचित '**पराशर झील- रहस्य और प्राकृतिक अचरज**', सुभाष चंद गुप्ता, उप निदेशक (सेवा निवृत्त) द्वारा रचित '**चामुन्डा मंदिर (चंबा) हिमाचल प्रदेश**' को पढ़कर हिमाचल की ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के स्थानों से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कुमार रविशंकर द्वारा रचित '**कविता अनुवाद करता हूँ**', राजेश शर्मा द्वारा रचित '**सबने देखा है**', आशा मेहता, सहायक द्वारा रचित '**कौन रोक पाएगा मुझे**' आदि कविताएँ बहुत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका को पढ़कर हिमाचल प्रदेश के लोकजीवन के साथ-साथ वेश-भूषा की भी जानकारी प्राप्त होती है। अन्य सभी रचनाएँ उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। कहीं-कहीं तस्वीरों के रंग गहरे हैं।

विविध विषयों के संग्रह के साथ पत्रिका बहुत ही अच्छी बन पड़ी है। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(डॉ. अरुण कु. शर्मा)
चिकित्सा अधीक्षक

हम अपने पसंद को चुनने के लिए स्वतंत्र हैं परंतु हम अपनी पसंद के चुनाव से प्राप्त परिणामों से मुक्त नहीं हो सकते।

राजभाषा पखवाड़े पर सजी प्रदर्शनी

दिव्य हिमाचल ब्यूरो-बीबीएन

कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में पहली सितंबर से चलाए जा रहे राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान चार प्रतियोगिताओं का आयोजन कार्यालय के कार्मिकों के बीच किया गया। जिसमें सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। राजभाषा शाखा द्वारा दो सितंबर को कोविड-19 के कारण बदलती कार्यालय की कार्य संस्कृति विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तीन सितंबर को हिंदी टिप्पण आलेखन, चार सितंबर को राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। इसके अलावा दस सितंबर को को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिसमें अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक आर गुणसेकरन तथा अन्य अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जबकि 11 सितंबर को कोरोना काल में सामाजिकता विषय पर वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड-19 के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों का अनुपालन करते हुए किया गया। इसके अलावा राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई व

● कल मनाया जाएगा हिंदी दिवस

प्रदर्शनी में हिंदी पुस्तकें, शब्दावलियां, पत्रिकाएं आदि प्रदर्शित की गईं। अधिकारियों ने प्रदर्शनी की सराहना की तथा हिंदी पुस्तकों में रुचि दिखाई व सुझाव पुस्तिका में अपने सुझाव भी दिए। राजभाषा के प्रभारी अधिकारी, हरपाल सिंह सैनी ने बताया कि दिनांक 14 सितंबर-2020 को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाएगा जिसमें सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाए। इस मौके उप राज्य क्षेत्रीय निदेशक पीबी. गुरुंग, चंद्रशेखर, आलोक रंजन समेत अनेक लोग उपस्थित थे।

ई.एस.आई.सी. कार्यालय में मनाया हिंदी दिवस

बद्दी, 14 सितम्बर (आदित्य चड्डा): कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में सोमवार 14 को हिंदी दिवस समारोह हर्ष और उल्लास से मनाया गया। समारोह के आयोजन में कोविड-19 के तहत जारी मौजूदा दिशा-निर्देशों का ध्यान रखते हुए सीमित संख्या में लोग कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहे। जबकि अन्य कर्मचारी समारोह से वेब मीटिंग के द्वारा ऑनलाइन जुड़े। समारोह का शुभारंभ अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक गुणसेकरन आर, राज्य चिकित्सा अधिकारी डा. अमित शालीवाल, उप निदेशक पी.बी.गुरुंग, राजभाषा प्रभारी अधिकारी हरपाल सिंह, सहायक निदेशक विकास वर्मा तथा वरिष्ठ अनुवादक कुमार रविशंकर ने पंचदीप

निगम कार्यालय बददी में हिंदी दिवस के दौरान प्रतियोगिता विजेताओं को सम्मानित करते निगम के अपर आयुक्त।

बद्दी में धूमधाम से मनाया हिंदी दिवस

दिव्य हिमाचल ब्यूरो-बीबीएन

कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में 14 को हिंदी दिवस समारोह हर्ष और उल्लास से मनाया गया। समारोह के आयोजन में कोविड-19 के तहत जारी मौजूदा दिशा- निर्देशों का ध्यान रखते हुए सीमित संख्या में लोग कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहें जबकि अन्य कर्मचारी समारोह से वेब मीटिंग के द्वारा ऑनलाइन जुड़े। समारोह का शुभारंभ अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक गुणसेकरन आर, राज्य चिकित्सा अधिकारी डा.अमित शालीवाल, उपनिदेशक पीबी.गुरुंग, राजभाषा प्रभारी अधिकारी हरपाल सिंह, सहायक निदेशक विकास वर्मा तथा वरिष्ठ अनुवादक श्री कुमार रविशंकर ने पंचदीप प्रज्वलित कर किया।

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक कुमार रविशंकर ने आरंभ में स्वागत संबोधन में हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया हिंदी भारत सरकार की राजभाषा है तथा सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में काम करना चाहिए। कार्यक्रम में माननीय गृह मंत्री, अमित शाह द्वारा जारी संदेश का पाठ श्री विकास वर्मा, सहायक निदेशक ने किया तथा कर्मचारी राज्य बीमा निगम के महानिदेशक माननीय अनुराधा प्रसाद की अपील का पाठ उप निदेशक पीबी.गुरुंग द्वारा किया गया। इसके बाद सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा) हरपाल सिंह, द्वारा कार्यालय में राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यलय, बद्दी में सबसे अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रशासन शाखा को क्षेत्रीय निदेशक द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई जिसे शाखा अधिकारी पीबी-गुरुंग, शाखा अधीक्षक अंजना राणा तथा अन्य कर्मचारियों ने प्राप्त किया। राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वरिष्ठ अनुवादक को विशिष्ट सम्मान क्षेत्रीय निदेशक द्वारा दिया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड प्रदान किया गया।

इन प्रतियोगिताओं में मनोज तंवर, अरविंद मंगलम, फिरोज अहमद, पारूल गुप्ता, हिमांशु कश्यप, सुमित चब्बा, वीना गुप्ता, आशा मेहता, संतोष कुमार, अभिषेक तिवारी ने पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम में चंद्रशेखर, बृजमोहन, दुखमोचन गोपाल, सुकोमल आदि उपस्थित रहे।

ई.एस.आई.सी. बद्दी में हिंदी दिवस की धूम

मनपुरा, 14 सितम्बर (कस्मी) : कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में सोमवार को हिंदी दिवस समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। [illegible]

मनपुरा : कर्मचारी राज्य बीमा निगम कार्यालय बद्दी में हिंदी दिवस के दौरान प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते निगम के अपर आयुक्त। (कस्मी)

[illegible]

बद्दी में 14 को मनाया जाएगा हिन्दी दिवस

मनपुरा, 11 सितम्बर (कस्मी): [illegible] कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में एक सितम्बर से चलाए जा रहे राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। राजभाषा शाखा द्वारा 2 सितम्बर को कोविड-19 के कारण बदलती कार्यालय की कार्य संस्कृति विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 3 सितम्बर को हिन्दी टिप्पणी आलेखन, 4 सितम्बर को राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। इसके अलावा 10 सितम्बर को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। इसमें अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक आर. गुणसेकरन तथा अन्य अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। 11 सितम्बर को कोरोना काल में सामाजिकता विषय पर वाक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड-19 के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की अनुपालना करते हुए किया गया। इसके अलावा राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई व प्रदर्शनी में हिन्दी पुस्तकें, शब्दावलियां व पत्रिकाएं आदि प्रदर्शित की गईं। राजभाषा के प्रभारी अधिकारी, हरपाल सिंह सैनी ने बताया कि 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस मौके उप राज्य क्षेत्रीय निदेशक पी.बी. गुरुंग, चंद्रशेखर व आलोक रंजन समेत अन्य उपस्थित थे।

मनपुरा : राजभाषा पखवाड़े के दौरान ई.एस.सी. कार्यालय बद्दी में निबंध प्रतियोगिता में हिस्सा लेते प्रतिभागी। (कस्मी)

...जाब केसरी ई-पेपर Sat, 12 September 2020
Edition: solan sirmour kesari, Page no. 2

चंडीगढ़ | शनिवार, 12 सितंबर 2020 | 6

बद्दी में राजभाषा पखवाड़े के दौरान बीमा निगम कार्यालय में लगाई राजभाषा प्रदर्शनी में किताबें देखते लोग। संवाद

बद्दी में 14 सितंबर को मनाया जाएगा हिंदी दिवस

हिंदी पखवाड़े के दौरान लगाई राजभाषा प्रदर्शनी

संवाद न्यूज एजेंसी

बद्दी(सोलन)। कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी में 1 सितंबर से चलाए जा रहे राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के दौरान शुक्रवार को कोरोना काल में सामाजिकता विषय पर वॉक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन कोविड-19 के मद्देनजर भारत सरकार की ओर से समय-समय पर जारी निर्देशों की अनुपालन करते हुए किया गया। इससे पहले कोविड-19 के कारण बदलती कार्यालय की कार्य संस्कृति विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन, हिंदी आलेखन, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। इसके अलावा एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। इसमें आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक आर गुणसेकरन और अन्य अधिकारियों ने कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। पखवाड़े के दौरान राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई और प्रदर्शनी में हिंदी पुस्तकें, शब्दावलियां, पत्रिकाएं आदि प्रदर्शित की गईं। अधिकारियों ने प्रदर्शनी की सराहना की और हिंदी पुस्तकों में रुचि दिखाई और सुझाव पुस्तिका में अपने सुझाव भी दिए। राजभाषा के प्रभारी अधिकारी हरपाल सिंह सैनी ने बताया कि दिनांक 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाएगा। इसमें सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाए। इस मौके उप राज्य क्षेत्रीय निदेशक पीबी गुरुंग, चंद्रशेखर, आलोक रंजन समेत अनेक लोग उपस्थित थे।

हिम-ज्योति

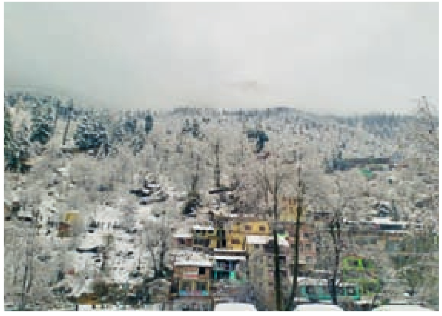

फोटोः छेरिंग समफेल, सहायक निदेशक
एवं सुकोमल कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक

ऑनलाइन पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए
सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें

क) ई–पत्रिकाः

https://fliphtml5.com/hkbiu/vdey

ख) पीडीएफः

https://www.esic.nic.in/attachments/publicationfile/559ecf7620387a38f2d6ebe47f3a40f9.pdf

स्मार्टफोन/टेबलेट पर पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए
क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

ई–पत्रिका

पीडीएफ